SAHABIYAT AUR ISHQE RASOOL (HINDI)

सहाबियात के आ'ला औसाफ़

सिलसिला नम्बर 2

# सहाबियात और इश्क़े रसूल

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

# किताब पढ़ने की दुआ

**अज़ :** शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **दीनी किताब** या **इस्लामी सबक़** पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई **दुआ** पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे **याद रहेगा**। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

**तर्जमा :** ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े ख़ोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले !

(اَلْمُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکربیروت)

**नोट :** अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

*त़ालिबे ग़मे मदीना*
*बक़ीअ़*
*व मग़फ़िरत*
*13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.*

# क़ियामत के रोज़ ह़सरत

**फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा **ह़सरत** क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में **इल्म ह़ासिल** करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने **इल्म ह़ासिल किया** और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस **इल्म** पर अ़मल न किया) (تاریخ دمشق لابن عساکر، ج ۵۱ ص ۱۳۸ دار الفکر بیروت)

## किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

*किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।*

# मजलिसे तराजिम (हिन्दी)

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** की मजलिस **"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या"** ने येह रिसाला **"सहा़बियात और इ़श्क़े रसूल"** उर्दू ज़बान में पेश किया है और **मजलिसे तराजिम** ने इस रिसाले का **हिन्दी रस्मुल ख़त़** करने की सआ़दत हा़सिल की है [ **भाषांतर** (*Translation*) नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** (*Transliteration*) या'नी बोली तो **उर्दू** ही है जब कि लीपि **हिन्दी** की गई है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है। इस रिसाले में अगर किसी जगह **ग़लत़ी** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए **Sms**, **E-mail** या **Whats App** ब शुमूल सफ़ह़ा व सत़र नम्बर) **मुत्त़लअ़** फ़रमा कर सवाबे आख़िरत कमाइये।

**मदनी इल्तिजा :** इस्लामी बहनें डायरेक्ट राबित़ा न फ़रमाएं।...✍

**राबित़ा :-** मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, नागर वाड़ा, बरोडा, गुजरात (अल हिन्द) ☎ 9327776311
E-mail : tarajim.hind@dawateislami.net

## उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) ख़ाका

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| थ = تھ | त = ت | फ = پھ | प = پ | भ = بھ | ब = ب | अ = ا |
| छ = چھ | च = چ | झ = جھ | ज = ج | स = ث | ठ = ٹھ | ट = ٹ |
| ज़ = ذ | ढ = ڈھ | ड = ڈ | ध = دھ | द = د | ख़ = خ | ह़ = ح |
| श = ش | स = س | ज़ = ژ | ज़ = ز | ढ़ = ڑھ | ड़ = ڑ | र = ر |
| फ़ = ف | ग़ = غ | अ़ = ع | ज़ = ظ | त़ = ط | ज़ = ض | स = ص |
| म = م | ल = ل | घ = گھ | ग = گ | ख = کھ | क = ک | क़ = ق |
| ा = ئ | ु = ؤ | आ = آ | य = ی | ह = ھ | व = و | न = ن |

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط

اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

# सहाबियात और इश्क़े रसूल

## दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़फ़िय्यत निशान है : ऐ लोगो ! बेशक बरोज़े क़ियामत उस की दह्शतों और ह़िसाबो किताब से जल्द नजात पाने वाला शख़्स वोह होगा जिस ने तुम में से मुझ पर दुन्या में ब कसरत दुरूद शरीफ़ पढ़े होंगे।[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो !** हौलनाकियों और दह्शतों वाले क़ियामत के दिन ह़िसाबो किताब से जल्द रिहाई पाना चाहती हैं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाते बा बरकत पर दुरूदे पाक की कसरत कीजिये।

*दुन्या व आख़िरत में जब मैं रहूं सलामत — प्यारे पढ़ूं न क्यूं कर तुम पर सलाम हर दम*
*क्या ख़ौफ़ मुझ को प्यारे नारे जहीम से हो — तुम हो शफ़ीए मह़शर तुम पर सलाम हर दम*[2]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1 ........ فردوس الاخبار، باب الياء، ۵/۲۷۷، حدیث: ۸۱۷۵

2.....ज़ौक़े ना'त, स. 120, 122

# आप हैं तो सब कुछ है

जंगे बद्र में बहुत से कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के सरदारों के क़त्ल पर मक्के का हर घर मातम कदा बन गया और बच्चा बच्चा जोशे इन्तिक़ाम में आतिशे ग़ैज़ो ग़ज़ब का तन्नूर बन कर मुसलमानों से लड़ने के लिये बे क़रार हो गया। अ़रब ख़ुसूसन क़ुरैश का येह तुर्रए इम्तियाज़ था कि वोह अपने मक़्तूल के ख़ून का बदला लेने को अपना फ़र्ज़े मन्सबी समझते थे। लिहाज़ा कुफ़्फ़ारे मक्का ने जल्द से जल्द मुसलमानों से अपने मक़्तूलों के ख़ून का बदला लेने का अ़ज़्म कर लिया और सब मिल कर अपने सरदार अबू सुफ़्यान के पास गए ताकि उसे राज़ी कर के मुसलमानों को दुन्या से नेस्तो नाबूद करने की ख़ातिर एक अ़ज़ीम फ़ौज ले कर मदीने पर चढ़ाई की जाए। क़ुरैश को जंगे बद्र से येह तजरिबा हो चुका था कि मुसलमानों से लड़ना आसान नहीं, आंधियों और तूफ़ानों का मुक़ाबला, समन्दर की मौजों से टकराना और पहाड़ों से टक्कर लेना बहुत आसान है मगर आ़शिक़ाने रसूल से जंग करना बड़ा ही मुश्किल है। इस लिये जहां उन्हों ने हथयारों की तय्यारी और सामाने जंग की ख़ूब ख़रीदारी की वहीं पूरे अ़रब में जंग का जोश और लड़ाई का बुख़ार भी फेला दिया। यहां तक कि बच्चा बच्चा **ख़ून का बदला ख़ून** का ना'रा लगाते हुवे मरने मारने पर तय्यार हो गया।

*गुरौहे कुफ़्र जब से भाग कर मक्के में आया था — उसी दिन से येह दस्तूरुल अ़मल उस ने बनाया था*
*कि तय्यारी करे हर फ़र्द जंगे इ़न्तिक़ामी की — पज़ीराई नहीं होगी किसी उ़ज़्र और ख़ामी की*
*क़बाइ़ल को क़ुरैशी शाइ़रों ने जा के भड़काया — परस्ताराने बातिल को ज़ियाए ह़क़ से धड़काया*
*कि येह मस्अला है दीने आबाई की इ़ज़्ज़त का — पुराने मस्लके लाती व उ़ज़्ज़ाई की इ़ज़्ज़त का*
*है तारीख़े अ़रब पर येह बुरे मज़मून का धब्बा — धुलेगा अब तो मुस्लिम ख़ून ही से ख़ून का धब्बा*
*कुरैशी क़ासिदों ने इस त़रह़ जब आग भड़काई — भड़क उठ्ठे क़बाइ़ल के ख़यालाते मनो माई*[1]

अल ग़रज़ अबू सुफ़्यान की सिपह सालारी में बे पनाह जोशो ख़रोश और इन्तिहाई तय्यारी के साथ कुफ़्फ़ारे मक्का का लश्करे जर्रार रवाना हुवा तो मैदाने उहुद में जां निसाराने मुस्त़फ़ा ने उस लश्कर के ग़ुरूर को ख़ाक में मिला दिया। फिर बा'ज़ मुसलमानों के जबले रुमात से हट जाने पर जो पांसा पलटा तो अन्होनी होनी हो गई, कुफ़्फ़ारे मक्का ने इस्लाम का नामो निशान रूए ज़मीन से ख़त्म करने के लिये सरधड़ की बाज़ी लगा दी। उधर जां निसाराने मुस्त़फ़ा ने भी उन की पेश क़दमी को रोकने के लिये वोह कारहाए नुमायां सर अन्जाम दिये कि तारीख़ आज भी अंगुश्त ब दन्दां है, फिर अचानक किसी बद बख़्त ने येह बे पर की उड़ा दी कि जाने जहां صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस जहां में नहीं रहे तो गोया क़ियामत बरपा हो गई, किसी को किसी की ख़बर न रही, बा'ज़ सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان तो जी हार बैठे और बा'ज़ उस मैदाने कारज़ार में गोया येह कहते हुवे कूद पड़े कि जिन्हें देख के जीते थे वोह न रहे तो इस जहान में रहने का क्या मज़ा ! चलो ! कूच से पहले कुछ नारियों को वासिले जहन्नम ही करते चलें। इसी सरासीमगी (سراسیمگی) और परेशानी के आ़लम में जहां मर्दों ने बहादुरी व जुरअत के अन

[1]....शाहनामए इस्लाम मुकम्मल, ह़िस्सए दुवुम, स. 325

मिट निशानात छोड़े वहीं दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उ़श्शाक़ सह़ाबियात भी मुजाहिदाना जज़्बात में किसी से पीछे न रहीं। चुनान्चे,

## ह़ज़रते उम्मे अ़म्मारा की जां निसारी

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 862 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **सीरते मुस्त़फ़ा** सफ़ह़ा 279 पर है : ह़ज़रते बीबी उम्मे अ़म्मारा जिन का नाम नसीबा है जंगे उहुद में अपने शौहर ह़ज़रते ज़ैद बिन आ़सिम और दो फ़रज़न्द ह़ज़रते अ़म्मारा और ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم) को साथ ले कर आई थीं। पहले तो येह मुजाहिदीन को पानी पिलाती रहीं लेकिन जब हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर कुफ़्फ़ार की यलग़ार का होश रुबा मन्ज़र देखा तो मश्क को फैंक दिया और एक ख़न्जर ले कर कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में सीना सिपर हो कर खड़ी हो गईं और कुफ़्फ़ार के तीर व तल्वार के हर एक वार को रोकती रहीं। चुनान्चे, इन के सर और गर्दन पर 13 ज़ख़्म लगे। इब्ने क़मीआ मलऊ़न ने जब हुज़ूर रिसालत मआब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर तल्वार चला दी तो बीबी उम्मे अ़म्मारा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने आगे बढ़ कर अपने बदन पर रोका। जिस से उन के कन्धे पर इतना गहरा ज़ख़्म आया कि ग़ार पड़ गया, फिर ख़ुद बढ़ कर इब्ने क़मीआ के शाने पर ज़ोरदार तल्वार मारी लेकिन वोह मलऊ़न दोहरी ज़िर्ह पहने हुवे था इस लिये बच गया।

ह़ज़रते बीबी उम्मे अ़म्मारा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا के फ़रज़न्द ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه कहते हैं कि मुझे एक काफ़िर ने ज़ख़्मी कर

दिया और मेरे ज़ख़्म से ख़ून बन्द नहीं होता था। मेरी वालिदा ह़ज़रते उम्मे अ़म्मारा ने फ़ौरन अपना कपड़ा फाड़ कर ज़ख़्म को बांध दिया और कहा कि बेटा उठो, खड़े हो जाओ और फिर जिहाद में मश्ग़ूल हो जाओ। इत्तिफ़ाक़ से वोही काफ़िर हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने आ गया तो आप ने फ़रमाया कि ऐ उम्मे अ़म्मारा ! देख तेरे बेटे को ज़ख़्मी करने वाला येही है। येह सुनते ही ह़ज़रते बीबी उम्मे अ़म्मारा ने झपट कर उस काफ़िर की टांग पर तल्वार का ऐसा भरपूर हाथ मारा कि वोह काफ़िर गिर पड़ा और फिर चल न सका बल्कि सुरीन के बल घिसटता हुवा भागा। येह मन्ज़र देख कर हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हंस पड़े और फ़रमाया कि ऐ उम्मे अ़म्मारा ! तू ख़ुदा का शुक्र अदा कर कि उस ने तुझ को इतनी ताक़त और हिम्मत अ़त़ा फ़रमाई कि तू ने ख़ुदा की राह में जिहाद किया, ह़ज़रते बीबी उम्मे अ़म्मारा ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! दुआ़ फ़रमाइये कि हम लोगों को जन्नत में आप की ख़िदमत गुज़ारी का शरफ़ ह़ासिल हो जाए। उस वक़्त आप ने उन के लिये और उन के शौहर और उन के बेटों के लिये इस त़रह़ दुआ़ फ़रमाई : اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُمْ رُفَقَائِیْ فِی الْجَنَّةِ या **अल्लाह** ! इन सब को जन्नत में मेरा रफ़ीक़ बना दे। ह़ज़रते बीबी उम्मे अ़म्मारा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ज़िन्दगी भर अ़लानिया येह कहती रहीं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इस दुआ़ के बा'द दुन्या में बड़ी से बड़ी मुसीबत भी मुझ पर आ जाए तो मुझे उस की कोई परवाह नहीं है।[1]

[1].....सीरते मुस्त़फ़ा, स. 279

## महब्बते रसूल फ़र्ज़ है

**प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो** ! कुरबान जाइये सय्यिदतुना उम्मे अ़म्मारा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के इश्क़े रसूल पर ! जिन्हों ने अपने ग़म ख़्वार आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को दुश्मनों के घेरे में देख कर अपनी नज़ाकत का ख़याल किये बिग़ैर बहादुरी व जुरअत के वोह जोहर दिखाए कि प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी हंस दिये और खुश हो कर उन्हें अपनी दाइमी रफ़ाक़त का वोह मुज़्दए जांफ़िज़ा सुनाया कि ह़ज़रते उम्मे अ़म्मारा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا को ता ह़यात इस पर नाज़ रहा। एक शाइर ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की बहादुरी को क्या ही ख़ूब अन्दाज़ में बयान किया है :

*उन्हीं में एक बीबी ह़ज़रते उम्मे अ़म्मारा थीं — उहुद में ख़िदमतें जिन की बहुत ही आश्कारा थीं*
*पिलाती थी येह बीबी ज़ख़्मियाने जंग को पानी — पए इस्लाम दे कर अपने फ़रज़न्दों की कुरबानी*
*हुवे उस ज़िन्दगी बख़्शे जहां की जान के दुश्मन — नबी की ज़ात पर जब झुक पड़े ईमान के दुश्मन*
*तो इस बीबी ने रख दी मश्क, चादर से कमर बांधी — इसी शम्ए हुदा पर जब पलट कर आ गई आंधी*
*रसूलुल्लाह पर कुरबान थे अल्लाह के ग़ाज़ी — थे इस के शौहर व फ़रज़न्द भी मसरूफ़े जां बाज़ी*
*सिपर बन कर लगी फिरने वोह गिर्दे हादिये कामिल — हुई येह शेर ज़न भी अब क़िताले जंग में शामिल*
*कोई ह़िर्बा वुजूदे पाक तक आने न देती थी — येह अपनी जान पर हर ज़ख़्म दामन गीर लेती थी*
*किया इक लख़्त बढ़ कर ह़म्ला एक बदकीश ने इस पर — नज़र आई नई सूरत जो हिर्ज़े जाने पैग़म्बर*
*मरोड़ा उस का बाज़ू छीन ली तल्वार दुश्मन से — नहती थी मगर करने लगी पैकारे दुश्मन से*
*हुवा इस शेर ज़न के ख़ौफ़ से आ'दा में सन्नाटा — उसी शमशीर से इस ने सरे शमशीर ज़न काटा*

जिधर बढ़ते हुवे पाती थी वोह महबूबे बारी को पहुंचती थी वहीं उम्मे अ़म्मारा जां निसारी को
सर व गर्दन पे उस बीबी ने तेरह ज़ख़्म खाए थे मगर मैदान से उस के क़दम हटने न पाए थे
येह उठी थी नमाज़े सुब्ह़ को तारों के साए में नमाज़े ज़ोहर तक क़ाइम थी तल्वारों के साए में
येही माएं हैं जिन की गोद में इस्लाम पलता है
इसी ग़ैरत से इन्सां नूर के सांचे में ढलता है [1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## इ़श्क़े महब्बत क्या है ?

**प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो !** आख़िर वोह कौन सा जज़्बा था जिस के तह़्त ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे अ़म्मारा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا परवानों की त़रह़ शम्ए रिसालत पर अपनी जान निसार करने के लिये तय्यार हो गईं। येह कोई ह़ैरानी और अचंभे की बात नहीं, क्यूंकि येही वोह जज़्बा था जिस ने ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल ह़बशी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को सह़रा की तपती रेत पर सीने पर पड़ी भारी चट्टान तले दबे हुवे भी **अल-अह़द अल-अह़द** की सदाए दिल नवाज़ बुलन्द करने का ह़ौसला दिया और येही वोह जज़्बा था जिसे ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे अ़म्मारा बिन यासिर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने अपने ख़ून का नज़राना दे कर परवान चढ़ाया।

**प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो !** इस जज़्बे को हम महब्बत कहते हैं। महब्बत आख़िर क्या चीज़ है कि बन्दा अपने महबूब पर सब कुछ वार देने के लिये तय्यार हो जाता है। लिहाज़ा येह

1 ....शाहनामए इस्लाम मुकम्मल, ह़िस्सए सिवुम, स. 496

जानना बहुत ज़रूरी है कि महब्बत किसे कहते हैं ? चुनान्चे, इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى इस के मुतअ़ल्लिक़ **मुकाशफ़तुल कुलूब** में फ़रमाते हैं कि महब्बत उस कैफ़िय्यत और जज़्बे का नाम है जो किसी पसन्दीदा शै की त़रफ़ त़बीअ़त के मैलान को ज़ाहिर करता है, अगर येह मैलान शिद्दत इख़्तियार कर जाए तो उसे इश्क़ कहते हैं । इस में ज़ियादती होती रहती है यहां तक कि आ़शिक़ महबूब का बन्दए बे दाम बन जाता है और मालो दौलत (यहां तक कि जान तक) उस पर क़ुरबान कर देता है ।[1]

## इश्क़ो महब्बत में फ़र्क़

**प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो** ! बिलाशुबा महब्बते ख़ुदा व रसूल एक ने'मत है, जिन के दिल **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महब्बत से सरशार होते हैं उन की रूह़ भी इस की मिठास मह़सूस करती है, उन की ज़िन्दगियां जहां इस पाकीज़ा महब्बत से संवरती हैं वहीं येह महब्बत तारीकी में उम्मीद का चराग़ बन कर उन्हें राहे ह़क़ से भटकने से भी बचाती है, मगर याद रखिये ! महब्बत और इश्क़ के मा'ना व मफ़्हूम में क़दरे फ़र्क़ है। क्यूंकि **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से महब्बत तो हर मुसलमान करता है मगर आ़शिक़ का दरजा कोई कोई पाता है । चुनान्चे, अबू फ़ज़्ल इब्ने मन्ज़ूर अफ़्रीक़ी **लिसानुल अ़रब** में इश्क़ का मत़लब बयान करते हुवे फ़रमाते हैं :

[1] ........مكاشفة القلوب، ١٠-باب فى العشق، ص ٣٢

اَلْعِشْقُ فَرْطُ الْحُبِّ या'नी मह़ब्बत में ह़द से तजावुज़ करना इ़श्क़ है।[1] इसी त़रह़ आ'ला ह़ज़रत, इमामे अह़ले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए रिसालत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن **इ़श्क़** की ता'रीफ़ बयान करते हुवे फ़रमाते हैं : मह़ब्बत ब मा'ना लुग़वी जब पुख़्ता और मुअक्कदा (या'नी बहुत ज़ियादा पक्की) हो जाए तो इसी को **इ़श्क़** का नाम दिया जाता है फिर जिस की **अल्लाह** तआ़ला से पुख़्ता मह़ब्बत हो जाए और उस पर पुख़्तगिये मह़ब्बत के आसार (इस त़रह़) ज़ाहिर हो जाएं कि वोह हमा औक़ात **अल्लाह** तआ़ला के ज़िक्रो फ़िक्र और उस की इत़ाअ़त में मसरूफ़ रहे तो फिर कोई मानेअ़ (या'नी रुकावट) नहीं कि उस की मह़ब्बत को **इ़श्क़** कहा जाए, क्यूंकि मह़ब्बत ही का दूसरा नाम **इ़श्क़** है।[2]

## मह़ब्बते बारी व मह़बूबे बारी से मुराद

**प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो !** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन मुह़म्मद क़स्त़लानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِي फ़रमाते हैं : किसी दाना शख़्स का क़ौल है कि एक म्यान में दो तल्वारें नहीं रह सकतीं, इसी त़रह़ एक दिल में दो मह़ब्बतों की गुन्जाइश नहीं। लिहाज़ा किसी का अपने मह़बूब की त़रफ़ मुतवज्जेह होना इस बात को लाज़िम कर देता है कि वोह बाक़ी हर शै से मुंह मोड़ ले, क्यूंकि मह़ब्बत में मुनाफ़क़त दुरुस्त नहीं, मगर (मह़ब्बते बारी तआ़ला के साथ साथ) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत को बाक़ी हर शै की मह़ब्बत से

[1] .....لسان العرب، ۵/ ۲۶۳۵

[2] ....फ़तावा रज़विय्या, 21 / 115 मुल्तक़त़न

मुक़द्दम जानना लाज़िम है, बल्कि इस के बिग़ैर तो ईमान ही मुकम्मल नहीं क्यूंकि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत दर ह़क़ीक़त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ही मह़ब्बत है[1] और मह़ब्बते बारी तआ़ला के मुतअ़ल्लिक़ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुह़म्मद सह्ल बिन अ़ब्दुल्लाह तुस्तरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मह़ब्बत की अ़लामत क़ुरआने करीम से मह़ब्बत है और क़ुरआने करीम से मह़ब्बत की अ़लामत नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत है और ह़बीबे ख़ुदा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत की अ़लामत आप की सुन्नतों से मह़ब्बत है। जब कि इन सब की मह़ब्बत की अ़लामत आख़िरत से मह़ब्बत है।[2]

## क़ुरआनो सुन्नत और मह़ब्बते रसूल

फ़रमाने बारी तआ़ला है :

قُلْ اِنْ كَانَ اٰبَآؤُكُمْ وَاَبْنَآؤُكُمْ وَاِخْوَانُكُمْ وَاَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيْرَتُكُمْ وَاَمْوَالُ ِۨاقْتَرَفْتُمُوْهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسٰكِنُ تَرْضَوْنَهَآ اَحَبَّ اِلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَجِهَادٍ فِيْ سَبِيْلِهٖ فَتَرَبَّصُوْا

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *तुम फ़रमाओ अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी औ़रतें और तुम्हारा कुम्बा और तुम्हारी कमाई के माल और वोह सौदा जिस के नुक़्सान का तुम्हें डर है और तुम्हारे पसन्द के मकान येह चीज़ें **अल्लाह** और उस के रसूल और उस की राह में*

[1] ..... ماخوذ از المواهب اللدنيه، المقصد السابع، الفصل الاول فى وجوب محبته... الخ، ۲/ ۴۸۲

[2] ..... تفسير القرطبي، پ۳، آل عمران، تحت الآية: ۳۱، المجلد الثانى، ۴/ ۴۱

حَتّٰى يَاْتِيَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿۲۴﴾

(پ۱۰، التوبۃ:۲۴)

*लड़ने से ज़ियादा प्यारे हों तो रास्ता देखो (इन्तिज़ार करो) यहां तक कि* **अल्लाह** *अपना हुक्म लाए और* **अल्लाह** *फ़ासिक़ों को राह नहीं देता।*

**प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो !** **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बा'द बन्दे को सब से ज़ियादा मह़ब्बत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से होनी चाहिये, जैसा कि **सीरते मुस्त़फ़ा** सफ़ह़ा 831 पर है : इस आयते मुबारका का ह़ासिल मत़लब येह है कि ऐ मुसलमानो ! जब तुम ईमान लाए हो और **अल्लाह** व रसूल की मह़ब्बत का दा'वा करते हो तो अब इस के बा'द अगर तुम लोग किसी ग़ैर की मह़ब्बत को उन की मह़ब्बत पर तरजीह़ दोगे तो ख़ूब समझ लो कि तुम्हारा ईमान और **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم की मह़ब्बत का दा'वा बिल्कुल ग़लत़ हो जाएगा और तुम अ़ज़ाबे इलाही और क़ह्रे ख़ुदावन्दी से न बच सकोगे। नीज़ आयत के आख़िरी टुकड़े से येह भी साबित होता है कि जिस के दिल में **अल्लाह** व रसूल की मह़ब्बत नहीं यक़ीनन बिलाशुबा उस के ईमान में ख़लल है।[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन अह़मद अन्सारी क़ुरत़ुबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : येह आयते मुबारका **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم की मह़ब्बत के वाजिब होने पर दलालत करती है और इस बारे में उम्मत का

[1]....सीरते मुस्त़फ़ा, स. 831

कोई इख़्तिलाफ़ भी नहीं है, बल्कि येह बात ज़रूरी है कि इन की मह़ब्बत हर मह़बूब (की मह़ब्बत) पर मुक़द्दम हो।[1]

*साबित हुवा कि जुम्ला फ़राइज़ फ़ुरूअ़ हैं*
*अस्लुल उसूल बन्दगी उस ताजवर की है*[2]

## मह़ब्बते रसूल के फ़र्ज़ होने की एक अ़क़्ली तौजीह

**प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो !** मह़ब्बत की बुन्याद येह चीज़ें हैं : जमाल व कमाल और नवाल (या'नी एह़सान)। मुराद येह है कि इन्सान किसी से मह़ब्बत करता है तो उस के पेशे नज़र उस की सूरत का ह़ुस्न या'नी जमाले जहां आरा होता है या सीरत का कमाल व अकमल होना या वोह उस के एह़सानात के सबब उस से मह़ब्बत करने लगता है। चुनान्चे, इस ए'तिबार से अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देखें तो आप हर वस्फ़ में बा कमाल हैं, कोई आप का सानी नहीं, ह़ुस्ने सूरत में कोई मिस्ल है न ह़ुस्ने सीरत में कोई मिसाल।[3] जैसा कि मद्दाह़े ह़बीब ह़ज़रते सय्यिदुना ह़स्सान बिन साबित رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने बारगाहे ह़बीबे ख़ुदा में नज़रानए अ़क़ीदत पेश करते हुवे फ़रमाया :

وَاَحْسَنُ مِنْكَ لَمْ تَرَ قَطُّ عَيْنِيْ ! وَاَجْمَلُ مِنْكَ لَمْ تَلِدِ النِّسَآءُ
خُلِقْتَ مُبَرَّاً مِّنْ كُلِّ عَيْبٍ ! كَاَنَّكَ قَدْ خُلِقْتَ كَمَا تَشَآءُ[4]

[1]........تفسیر القرطبی، پ۱۰، التوبۃ، تحت الآیۃ:۲۴، المجلد الرابع، ۸/ ۲۲

[2].....ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 205

[3]........ماخوذ از المواھب اللدنیہ، المقصد السابع، الفصل الاول فی وجوب محبتہ...الخ، ۲/ ۴۷۸

[4]........دیوان حسان بن ثابت، حرف الف، خلقت کما تشاء، ص ۲۱

या'नी (या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! ) आप से ज़ियादा हुस्नो जमाल वाला मेरी आंख ने कभी देखा है न आप से ज़ियादा कमाल वाला किसी औ़रत ने जना है। आप हर ऐ़ब व नुक़्सान से पाक पैदा किये गए हैं गोया आप ऐसे ही पैदा किये गए जैसे ह़सीनो जमील पैदा होना चाहते थे।

आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت फ़रमाते हैं :

*तेरे ख़ुल्क़ को ह़क़ ने अ़ज़ीम कहा तेरी ख़ल्क़ को ह़क़ ने जमील किया*
*कोई तुझ सा हुवा है न होगा शहा तेरे ख़ालिक़े ह़ुस्नो अदा की क़सम*[1]

**प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो !** अल ग़रज़ मह़बूबे रब्बे दावर, शफ़ीए़ रोज़े मह़शर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ह़ुस्नो जमाल को देखा जाए या सीरत के कमाल को, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़क़ रखते हैं कि आप से ही मह़ब्बत की जाए। लेकिन अगर कोई मह़ब्बत में नवाल या'नी किसी के एह़सान को सबब मानता है तो इस ए'तिबार से आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही मह़ब्बत का अव्वलीन ह़क़ रखते हैं। क्यूंकि उम्मत पर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के एह़सानात शुमार से बाहर हैं, इन्सानिय्यत की हिदायत व फ़लाह़ के लिये आप ने क्या कुछ नहीं किया, आप मोमिनीन के ह़क़ में रऊफ़ो रह़ीम बल्कि रह़मतुल्लिल आ़लमीन हैं, आप ही की वज्ह से इस उम्मत को ख़ैरे उम्मत का लक़ब मिला, आप ही के ज़रीए़ किताबो ह़िक्मत की ता'लीम चार दांगे आ़लम में आ़म हुई। चुनान्चे, आप का मुसलमानों की जानों से जो एक ख़ास तअ़ल्लुक़ है वोह भी

[1].....ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 80

इसी बात का मुतक़ाज़ी है कि आप से मह़ब्बत की जाए। जैसा कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : कोई मोमिन ऐसा नहीं जिस के लिये मैं दुन्या व आख़िरत में सारे इन्सानों से ज़ियादा औला व अक़रब न होऊं।[1] और येही मज़मून इस फ़रमाने बारी तआ़ला से भी वाज़ेह़ हो रहा है :

اَلنَّبِیُّ اَوْلٰى بِالْمُؤْمِنِیْنَ مِنْ اَنْفُسِهِمْ (پ۲۱، الاحزاب: ۶)

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : येह नबी मुसलमानों का उन की जान से ज़ियादा मालिक है।*

मा'लूम हुवा जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते बा बरकात में तमाम ख़साइले जमीला व जमीअ़ अस्बाबे मह़ब्बत मौजूद हैं तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ात क्यूंकर मह़ब्बत के लाइक़ न होगी ?

## सह़ाबियात की वारफ़्तगी का आ़लम

**प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो !** सह़ाबियाते त़य्यिबात رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُنَّ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से किस क़दर मह़ब्बत करती थीं, येह वाक़िआ़ इस बात का वाज़ेह़ सुबूत है कि ग़ज़वए उ़हुद में शैत़ान ने बे पर की येह ख़बर उड़ा दी कि सरवरे काइनात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم शहीद हो गए हैं, जब येह हौलनाक ख़बर मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا में पहुंची तो वहां की ज़मीन दहल गई यहां तक कि वहां की पर्दा नशीन औ़रतों के दिलो दिमाग़ में सदमाते ग़म का भौंचाल आ गया, मदीने की

[1] ..... بخاری، کتاب فی الاستقراض ... الخ، باب الصلاۃ علی من ترک دینا، ص۶۱۷، حدیث: ۲۳۹۹

गलियों में ग़म व हुज़्न की फ़ज़ा छा गई, हर त़रफ़ से चीख़ो पुकार की आवाज़ें बुलन्द हुईं और हर आंख अश्कबार हो गई, रिवायात में आता है कि बा'ज़ औ़रतें जब अपने जज़्बात पर क़ाबू न पा सकीं तो तफ़्तीशे ह़ाल के लिये दीवाना वार मैदाने उहुद की त़रफ़ चल पड़ीं।[1]

किसी ने क्या ख़ूब इस मन्ज़र को अश्आ़र में यूं बयान किया है :

*समाअ़त में जो येह दिल रैश अख़्बारे वफ़ात आई — मदीने से निकल कर मोमिनाते क़ानितात आईं*
*नबी को ढूंडती थीं इस हलाकत ख़ेज़ मैदां में — लिये फिरती थीं इक तस्वीरे ह़सरत चश्मे ह़ैरां में*
*बहर सू ज़ख़्मियाने जंग को पानी पिलाती थीं — कहीं लेकिन सुराग़े साक़िये कौसर न पाती थीं*
*वोह माएं जिन की आग़ोशों ने पहले शेर नर पाले — रज़ाकारी से फिर इस्लाम पर क़ुरबान कर डाले*
*पिदर, शौहर, बरादर, पिसर सब इस्लाम पर सदक़े — ख़ुशी से कर दिये थे घर के घर इस्लाम पर सदक़े*
*न रिश्ते अब न कोई मामता मत़लूब थी उन को — वुजूदे पाके हादी की बक़ा मत़लूब थी इन को*[2]

**प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो !** ग़मे सरकार में निढाल वारफ़्तगी के आ़लम में मैदाने उहुद की त़रफ़ जाने वाली इन सह़ाबियात के इ़श्के़ रसूल के भी क्या कहने ! रास्ते में इन्हों ने अपने बाप, भाई, शौहर और बेटों की लाशें भी देखीं मगर कोई परवा न की और जब तक इन्हों ने जाने जानां صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपनी आंखों से न देख लिया इन के दिले बे क़रार को चैन न आया। आइये ! इन उ़श्शाक़े रसूल सह़ाबियात का तज़्किरा करती और अपने दिलों को इ़श्के़ रसूल से गर्माती हैं :

[1] .....سبل الهدى، الباب الثالث عشر فى غزوة احد، ذكر رحيل النبى...الخ، ۴/ ۳۳۵

[2].....शाहनामए इस्लाम मुकम्मल, ह़िस्सए सिवुम, स. 496

## भाई और शौहर की शहादत पर नाज़

इश्के सरवरे काइनात में तड़पती दीवाना वार मैदाने उहुद की तरफ़ जाने वाली इन सहाबियात में से एक आशिक़ा सहाबिया की नज़र एक ऊंट पर पड़े दो मक़्तूलों पर पड़ी तो उन्हों ने पूछा : येह कौन हैं ? वहां मौजूद सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने बताया कि एक तेरा भाई और दूसरा तेरा शौहर है । फ़रमाने लगीं : मुझे येह बताओ मेरे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कैसे हैं ? जब इन्हें बताया गया कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ैरो आफ़िय्यत से हैं तो फ़रमाने लगीं : अब मुझे किसी की परवा नहीं और जहां तक मेरे भाई और शौहर की बात है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दों को शहादत का मर्तबा अ़ता फ़रमाता है । चुनान्चे, इन के इसी क़ौल की ताईद में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने येह आयते मुबारका नाज़िल फ़रमाई :

وَيَتَّخِذَ مِنْكُمْ شُهَدَآءَ ؕ

(پ۴، آل عمران: ۱۴۰)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *और तुम में से कुछ लोगों को शहादत का मर्तबा दे ।*[1]

## क़बीलए बनी दीनार की बुढ़िया

क़बीलए बनी दीनार की एक औ़रत अपने जज़्बात से मग़्लूब हो कर अपने घर से निकल कर मैदाने जंग की तरफ़ चल पड़ी, रास्ते में उस को अपने बाप, भाई और शौहर की शहादत की ख़बर मिली मगर उस ने कोई परवा नहीं की और लोगों से येही

[1] ..... سبل الهدى، الباب الثالث عشر فى غزوة احد، ذكر رحيل النبى ... الخ، ۴/۳۳۵

पूछती रही कि येह बताओ ! मेरे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कैसे हैं ? जब उसे बताया गया कि اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आप हर त़रह़ ब ख़ैरिय्यत हैं तो भी उस बुढ़िया की तसल्ली नहीं हुई और कहने लगी : तुम लोग मुझे रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दीदार करा दो । जब लोगों ने उस को आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़रीब ले जा कर खड़ा कर दिया और उस ने जमाले नबुव्वत को देखा तो बे इख़्तियार उस की ज़बान से येह जुम्ला निकल पड़ा : كُلُّ مُصِيْبَةٍ بَعْدَكَ جَلَلٌ आप के होते हुवे हर मुसीबत हेच है ।

*बढ़ कर उस ने रुख़े अन्वर को जो देखा तो कहा !*
*तू सलामत है तो फिर हेच हैं सब रंजो अलम*
*मैं भी और बाप भी शौहर भी बरादर भी फ़िदा*
*ऐ शहे दीं ! तेरे होते क्या चीज़ हैं हम !* (1)

## सरवर की सलामती पर सब कुछ क़ुरबान

इसी त़रह़ की एक रिवायत में है कि इ़श्क़े रसूल से सरशार एक अन्सारी सह़ाबिया जब घर से निकल कर मैदाने जंग की त़रफ़ रवाना हुईं तो रास्ते में उन्हें दिल लर्ज़ा देने वाले मनाज़िर का सामना करना पड़ा, कहीं भाई और बेटे के लाशे को देखा तो कहीं शौहर और बाप की मय्यित पड़ी देखी मगर वोह आ़शिक़ा सह़ाबिया बिग़ैर परवा किये आगे बढ़ती जातीं और येही पूछती जातीं : मेरे मह़बूब, मेरे आक़ा व मौला कैसे हैं ?

1.....सीरते मुस्त़फ़ा, स. 832 ब ह़वाला السیرۃ النبویۃ، غزوہ احد، تحریض عمر لحسان...الخ، ۳/۴۷

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ब ख़ैरो आफ़िय्यत होने की ख़बर मिलने के बा वुजूद वोह रुकी नहीं बल्कि आगे बढ़ती गई और आख़िरे कार जब रुख़े अन्वर पर नज़र पड़ी तो बे क़रार हो कर फ़र्ते महब्बत में दामने मुस्तफ़ा को थाम लिया और अर्ज़ करने लगीं : ऐ **अल्लाह** के रसूल ! मेरे मां बाप आप पर क़ुरबान ! जब आप सलामत हैं तो मुझे किसी और की कोई परवा नहीं है ।[1]

*तसल्ली है पनाहे बे कसां ज़िन्दा सलामत है*
*कोई परवा नहीं सारा जहां ज़िन्दा सलामत है* [2]

## दीदारे सरकार की ख़ुशी में रोना भूल गई

**प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो !** येह तीन वाक़िआत उन सहाबियात के थे जो शैतानी अफ़्वाह सुन कर अपने जज़्बात पर क़ाबू न रख सकीं और घरों से निकल पड़ीं मगर जिन सहाबियात के जज़्बात क़ाबू में थे और वोह घरों से न निकलीं, उन के दिलों को भी क़रार न था, लिहाज़ा जब उन्हें मा'लूम हुवा कि मैदाने उहुद से वापसी पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन की बस्ती से गुज़र रहे हैं तो घरों में अपने शुहदा के लाशों पर रोने वाली येह सहाबियात दुखी दिलों के चैन, सरवरे कौनैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की एक झलक देखने के लिये बे क़रार हो कर बाहर निकल पड़ीं । जैसा कि हज़रते

[1] ..... المواهب اللدنيه، المقصد السابع، الفصل الاول فی وجوب محبته، ۲/۴۸۰ مفهومًا
[2] .....जन्नती ज़ेवर, स. 505

सय्यिदतुना आ़मिर अशहलिय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : जब हमें सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आमद की ख़बर मिली तो उस वक़्त हम अपने मक़्तूलीन पर रो रही थीं, चुनान्चे, हम रोना छोड़ कर सब की सब बाहर निकल आईं और जब मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देखा तो बे साख़्ता मेरी ज़बान से येह अल्फ़ाज़ जारी हो गए : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप के होते हर मुसीबत हेच है।[1]

## सरकार ही दिलों का सुरूर हैं

ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सा'द कब्शा बिन्ते राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को जब हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आमद की ख़बर हुई तो आप दौड़ती हुई बारगाहे रिसालत में पहुंची, उस वक़्त हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने घोड़े पर जल्वा गर थे जिस की लगाम आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ थामे हुवे थे, उन्हों ने (अपनी वालिदा को यूं बारगाहे रिसालत में आते देखा तो) अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! येह मेरी मां हैं। तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें ख़ुश आमदीद कहा। फिर उम्मे सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا मज़ीद क़रीब हुईं तो टिकटिकी बांधे हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दीदार की दौलत से अपनी निगाहों को माला माल करने लगीं और फिर यूं

[1] ..... کتاب المغازی للواقدی، غزوۃ احد، تسمیۃ من قتل المشرکین، ۱/۳۱۵ ملتقطًا

अर्ज़ गुज़ार हुई : ऐ **अल्लाह** के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप को सलामत देख कर मेरे दिल को जो सुरूर मिला है उस ने सारी मुसीबतों को मेरे लिये छोटा बना दिया है।[1]

## महब्बते मुस्तफ़ा के तक़ाज़े

**प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो !** इश्के रसूल का तक़ाज़ा येह है कि अहकामे बारी व महबूबे बारी तआला को ग़ौर से सुनिये और इन पर अमल कीजिये। जैसा कि आप को पर्दे में रहने का हुक्म दिया गया है तो आप पर लाज़िम है कि पर्दे में रहा करें और अपने शौहर और आबाओ अज्दाद की इज़्ज़तो अज़मत और नामूस को बरबाद मत कीजिये। येह दुन्या की चन्द रोज़ा ज़िन्दगी फ़ानी है। याद रखिये ! एक दिन मरना है और फिर क़ियामत के दिन बारगाहे खुदा व मुस्तफ़ा में मुंह भी दिखाना है। क़ब्र व जहन्नम के अज़ाब को याद कीजिये और सय्यिदा खातूने जन्नत व उम्महातुल मोमिनीन और दीगर सहाबियात رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن के नक़्शे क़दम पर चल कर अपनी दुन्या व आख़िरत को संवारिये और ग़ैर मुस्लिम औरतों के तरीक़ों पर चलना छोड़ दीजिये।

इस के इलावा सरवरे काइनात, फ़ख़्रे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ वालिहाना अक़ीदत और ईमानी महब्बत का एक तक़ाज़ा येह भी है कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वालिदैन और तमाम आबाओ अज्दाद बल्कि तमाम रिश्तेदारों के अदबो एहतिराम का इल्तिज़ाम रखा जाए। ब जुज़ उन रिश्तेदारों के जिन

[1] .....سبل الهدى، الباب الثالث عشر فى غزوة احد، ذكر رحيل النبي...الخ، ۴/۳۳۵ ملخصًا

का काफ़िर और जहन्नमी होना कुरआनो ह़दीस से यक़ीनी तौ़र पर साबित है। जैसे अबू लहब और उस की बीवी ह़म्मालतल ह़त़ब, बाक़ी तमाम क़राबत वालों का अदब मल्हूज़े ख़ात़िर रखना लाज़िम है क्यूंकि जिन लोगों को हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से निस्बते क़राबत ह़ासिल है उन की बे अदबी व गुस्ताख़ी यक़ीनन आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ईज़ा रसानी का बाइ़स होगी जो कि ममनूअ़ है जैसा कि कुरआने करीम में है कि जो लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ईज़ा देते हैं वोह दुन्या व आख़िरत में मलऊ़न हैं।[1]

## उम्मत पर हुक़ूक़े मुस्त़फ़ा

**प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो !** महबूबे रब्बे दावर, शफ़ीए रोज़े महशर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी उम्मत की हिदायत व इस्लाह़ और फ़लाह़ के लिये बेशुमार तकालीफ़ बरदाश्त फ़रमाईं, नीज़ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अपनी उम्मत की नजात व मग़फ़िरत की फ़िक्र और इस पर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़्क़त व रह़मत की इस कैफ़िय्यत पर कुरआन भी शाहिद है। चुनान्चे, इरशाद होता है :

لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :* *बेशक तुम्हारे पास तशरीफ़ लाए तुम में से वोह रसूल जिन पर*

1 ....सीरते मुस्त़फ़ा, स. 66 बित्तग़य्युरिन

عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۲۸﴾ (پ۱۱، التوبة: ۱۲۸)

*तुम्हारा मशक़्क़त में पड़ना गिरां है तुम्हारी भलाई के निहायत चाहने वाले मुसलमानों पर कमाल मेहरबान मेहरबान।*

महबूबे बारी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पूरी पूरी रातें जाग कर इबादत में मसरूफ़ रहते और उम्मत की मग़्फ़िरत के लिये दरबारे बारी में इन्तिहाई बे क़रारी के साथ गिर्या व ज़ारी फ़रमाते रहते। यहां तक कि खड़े खड़े अक्सर आप के पाए मुबारक पर वरम आ जाता था। चुनान्चे, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी उम्मत के लिये जो मशक़्क़तें उठाईं उन का तक़ाज़ा है कि उम्मत पर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के कुछ हुक़ूक़ हैं जिन को अदा करना हर उम्मती पर फ़र्ज़ व वाजिब है। चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना अल्लामा क़ाज़ी इयाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने दर्जे ज़ैल आठ हुक़ूक़ अपनी किताब शिफ़ा शरीफ़ में तफ़्सील से बयान फ़रमाए हैं :

(1) ईमान बिर्रसूल (2) इत्तिबाए सुन्नते रसूल (3) इताअ़ते रसूल (4) महब्बते रसूल (5) ता'ज़ीमे रसूल (6) मद्हे रसूल (7) दुरूद शरीफ़ (8) क़ब्रे अन्वर की ज़ियारत

**प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो !** आइये ! सहाबियाते तय्यिबात رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُنَّ की सीरत की रौशनी में इन हुक़ूक़ का मुख़्तसर जाइज़ा लेती हैं। चुनान्चे,

## ﴾1﴿ ईमान बिर्रसूल

रसूले ख़ुदा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ईमान लाना और जो कुछ आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से लाए हैं सिद्क़े दिल से इस का सच्चा मानना हर उम्मती पर फ़र्ज़े ऐ़न है और इस में कोई शक नहीं कि बिग़ैर रसूल पर ईमान लाए हरगिज़ कोई मुसलमान नहीं हो सकता।(1)

लिहाज़ा याद रखिये कि मह़ज़ तौह़ीदो रिसालत की गवाही काफ़ी नहीं बल्कि किसी का भी ईमान उस वक़्त तक कामिल नहीं हो सकता जब तक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अपनी जानो माल बल्कि सब से ज़ियादा मह़बूब न बना लिया जाए जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम में से कोई उस वक़्त तक (कामिल) मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उस के नज़्दीक उस के बाप, उस की औलाद और तमाम लोगों से बढ़ कर मह़बूब न हो जाऊं।(2)

*ख़ाक हो कर इ़श्क़ में आराम से सोना मिला*
*जान की इक्सीर है उल्फ़त रसूलुल्लाह की*(3)

एक रिवायत में है कि आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तीन बातों को ह़लावते ईमानी के ह़ुसूल की अ़लामत क़रार दिया, जिन

[1]........ کتاب الشفا، القسم الثانی، الباب الاول، فصل فی فرض الایمان به...الخ، ۲/۴، مفهومًا
[2]........ بخاری، کتاب بدء الایمان، باب حب الرسول ﷺ...الخ، ص ۷۴، حدیث: ۱۵
[3]....ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 153

में एक येह है कि बन्दे की नज़र में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ात काइनात की हर चीज़ से ज़ियादा महबूब व पसन्दीदा हो जाए।[1]

*येह इक जान क्या है अगर हों करोड़ों*
*तेरे नाम पर सब को वारा करूं मैं*[2]

## ﴾2﴿ इत्तिबाए सुन्नते रसूल

सरवरे काइनात, फ़ख़्रे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सीरते मुबारका और सुन्नते मुक़द्दसा की पैरवी हर मुसलमान पर वाजिब व लाज़िम है। जैसा कि फ़रमाने बारी है :

قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِیْ یُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَ یَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْؕ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ(۳۱)

(پ۳، آل عمران: ۳۱)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *ऐ महबूब तुम फ़रमा दो कि लोगो अगर तुम अल्लाह को दोस्त रखते हो तो मेरे फ़रमां बरदार हो जाओ अल्लाह तुम्हें दोस्त रखेगा और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है।*

इसी लिये आस्माने उम्मत के चमकते हुवे सितारे, हिदायत के चांद तारे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल के प्यारे सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم व सहाबियाते तृय्यिबात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ

[1]........ بخاری، کتاب بدء الایمان، باب حلاوۃ الایمان، ص ۷۸، حدیث: ۱۶ مفھومًا
[2]....सामाने बख़्शिश, स. 102

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हर सुन्नते करीमा की पैरवी को लाज़िम व ज़रूरी जानते और बाल बराबर भी किसी मुआ़मले में अपने प्यारे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतों से इन्हि़राफ़ या तर्क गवारा नहीं करते थे।

## ﴾3﴿ इता़अ़ते रसूल

येह भी हर उम्मत पर रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ह़क़ है कि हर उम्मती हर ह़ाल में आप के हर हुक्म की इता़अ़त करे और आप जिस बात का हुक्म दें बाल के करोड़वें हि़स्से के बराबर भी उस की ख़िलाफ़ वर्ज़ी का तसव्वुर न करे क्यूंकि आप की इता़अ़त और आप के अह़काम के आगे सरे तस्लीम ख़म कर देना हर उम्मती पर फ़र्ज़े ऐ़न है। चुनान्चे, इरशादे ख़ुदावन्दी है :

اَطِیْعُوا اللّٰهَ وَ اَطِیْعُوا الرَّسُوْلَ

(پ۵، النسآء: ۵۹)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *हुक्म मानो **अल्लाह** का और हुक्म मानो रसूल का।*

एक और मक़ाम पर है :

مَنْ یُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ ۚ

(پ۵، النسآء: ۸۰)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *जिस ने रसूल का हुक्म माना बेशक उस ने **अल्लाह** का हुक्म माना।*

**प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो !** मा'लूम हुवा इता़अ़ते रसूल के बिग़ैर इस्लाम का तसव्वुर ही नहीं किया जा सकता और इता़अ़ते रसूल करने वालों ही के लिये बुलन्द दरजात हैं। लिहाज़ा

हम पर लाज़िम है कि हर क़िस्म के क़ौलो फ़े'ल में आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सीरते त़य्यिबा से रहनुमाई ली जाए और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बयान कर्दा शरई हुदूद से तजावुज़ न किया जाए।

## ﴾4﴿ महब्बते रसूल

इसी त़रह़ हर उम्मती पर रसूले ख़ुदा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ह़क़ है कि वोह सारे जहान से बढ़ कर आप से मह़ब्बत रखे और सारी दुन्या की मह़बूब चीज़ों को आप की मह़ब्बत पर क़ुरबान कर दे। जैसा कि मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की ख़ालाजान ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा बिन्ते उ़त्बा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا एक बार सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुईं तो अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! एक वक़्त था कि मैं चाहती थी कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के घर के इ़लावा दुन्या भर में किसी का मकान न गिरे मगर ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! अब मेरी ख़्वाहिश है कि दुन्या में किसी का मकान रहे या न रहे मगर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मकान ज़रूर सलामत रहे। इरशाद फ़रमाया : तुम में से कोई भी उस वक़्त तक कामिल मोमिन नहीं हो सकता जब तक मैं उस के नज़्दीक उस की जान से ज़ियादा मह़बूब न हो जाऊं।[1]

[1] ..... اسد الغابة، حرف الفاء، ۷۱۹۰-فاطمة بنت عتبة، ۷/۲۲۳

**प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो !** अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत सिर्फ़ कामिल व अक्मल ईमान की अ़लामत ही नहीं बल्कि हर उम्मती पर रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह ह़क़ भी है कि वोह सारे जहान से बढ़ कर आप से मह़ब्बत रखे और सारी दुन्या को आप की मह़ब्बत पर कुरबान कर दे।

*मुह़म्मद की मह़ब्बत दीने ह़क़ की शर्ते अव्वल है*
*इसी में हो अगर ख़ामी तो सब कुछ ना मुकम्मल है*
*मुह़म्मद की मह़ब्बत है सनद आज़ाद होने की*
*ख़ुदा के दामने तौह़ीद में आबाद होने की*[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## सरकार की तक्लीफ़ बरदाश्त न होती

**प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो !** सह़ाबियाते त़य्यिबात رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُنَّ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से जिस क़दर मह़ब्बत करती थीं, इस की मिसालें शुमार से बाहर हैं। यहां सिर्फ़ चन्द मिसालें ही ज़िक्र की जा रही हैं। याद रखिये ! सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को पहुंचने वाली किसी भी क़िस्म की जिस्मानी तक्लीफ़ पर सह़ाबियाते त़य्यिबात رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُنَّ इस त़रह़ बे क़रार हो जातीं गोया येह तक्लीफ़ उन्हें पहुंची हो। चुनान्चे,

1....सह़ाबए किराम का इ़श्क़े रसूल, स. 22

मरवी है कि जब उम्महातुल मोमिनीन मरज़ुल मौत के दौरान बारगाहे नबुव्वत में ह़ाज़िर हुईं तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तक्लीफ़ इन से बरदाश्त न हुई । इस मौक़अ़ पर उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना सफ़िय्या رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने मह़बूबे ख़ुदा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से जो कुछ अ़र्ज़ की वोह आप के मह़ब्बते मुस्त़फ़ा का पैकर होने का मुंह बोला सुबूत है । चुनान्चे, आप ने अ़र्ज़ की : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! या नबिय्यल्लाह ! काश ! मैं आप की जगह होती । तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا की इस बात की तस्दीक़ करते हुवे दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रोबर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! येह सच बोलने वाली हैं ।[1]

## ﴾5﴿ ता'ज़ीमे रसूल

उम्मत पर हुक़ूक़े मुस्त़फ़ा में से एक निहायत ही अहम और बहुत बड़ा ह़क़ येह भी है कि हर उम्मती पर फ़र्ज़ ऐन है कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आप से निस्बत व तअ़ल्लुक़ रखने वाली तमाम चीज़ों की ता'ज़ीमो तौक़ीर और अदबो एह़तिराम करे और हरगिज़ हरगिज़ कभी उन की शान में कोई बे अदबी न करे । जैसा कि फ़रमाने बारी तआ़ला है :

اِنَّاۤ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّ مُبَشِّرًا وَّ نَذِيْرًا ۙ﴿۸﴾ لِّتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक हम ने तुम्हें भेजा ह़ाज़िरो नाज़िर और ख़ुशी और डर सुनाता ताकि ऐ लोगो तुम*

[1] ..... الاصابة، كتاب النساء، حرف الصاد، صفيه بنت حيي، ۸/۲۳۳ ملخصًا ملتقطًا

وَتُعَزِّرُوْهُ وَتُوَقِّرُوْهُ ؕ وَتُسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ۝ (پ۲۶، الفتح: ۸، ۹)

*अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाओ और रसूल की ता'ज़ीमो तौक़ीर करो और सुब्हो शाम अल्लाह की पाकी बोलो।*

**प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो !** अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शान में बद ज़बानी करने वाला और आप की तन्क़ीस (या'नी शान में कमी या गुस्ताख़ी) करने वाला काफ़िर है और जो उस के कुफ़्र और अ़ज़ाब में शक करे वोह भी काफ़िर है और तौहीने रिसालत करने वाले की दुन्या में येह सज़ा है कि वोह क़त्ल कर दिया जाएगा।[1] इसी त़रह़ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अह्ले बैत व आप की अज़्वाजे मुत़ह्हरात और आप के अस्ह़ाब को गाली देना या उन की शान में तन्क़ीस करना भी ह़राम है और ऐसा करने वाला मलऊ़न है।[2] येही वज्ह है कि सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم और सह़ाबियाते त़य्यिबात رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का बेह़द अदबो एह़तिराम करते और बारगाहे रिसालत के आदाब का हमेशा ख़याल रखते। चुनान्चे,

## आदाबे बारगाहे नबुव्वत की अनोखी मिसाल

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है कि दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रोबर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक

[1] ..... کتاب الشفا، القسم الرابع، الباب الاول فی بیان ماھو فی حقه...الخ، ۲/۱۸۸-۱۸۹

[2] ..... کتاب الشفا، القسم الرابع، الباب الثالث، فصل فی حکم ساب آل بیت النبی، ۲/۲۵۲

औ़रत को निकाह़ का पैग़ाम भेजा तो उस ने मा'ज़रत करते हुवे अ़र्ज़ की : मुझे आप से निकाह़ में कोई मस्अला नहीं, बल्कि आप तो मुझे सब से ज़ियादा महबूब हैं मगर मेरे बच्चे हैं और मैं नहीं चाहती कि येह आप के लिये तक्लीफ़ का बाइ़स बनें।[1]

## बारगाहे नबुव्वत की बे अदबी क़त्अ़न गवारा न थी

इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन आ़मिरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी क़ौम के शुयूख़ से रिवायत करते हैं कि एक मरतबा हम बाज़ारे उ़काज़ में थे कि सरवरे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे पास तशरीफ़ लाए और हमें दीने इस्लाम की दा'वत दी जो हम ने क़बूल कर ली। इतने में बुह़ैरा बिन फ़िरास कुशैरी आया और उस ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ऊंटनी की कोख में नेज़ा चुभा दिया जिस की वज्ह से वोह उछली और आप ज़मीन पर तशरीफ़ ले आए। उस दिन ह़ज़रते सय्यिदतुना जुबाआ़ बिन्ते आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا भी ईमान ला कर आ़शिक़ाने मुस्त़फ़ा में शामिल हो चुकी थीं, उन्हें मा'लूम हुवा तो वोह आपे से बाहर हो गईं और अपने चचाज़ाद भाइयों के पास आ कर उन की ग़ैरत को झन्झोड़ते हुवे ग़ज़बनाक लहजे में बोलीं : ऐ आले आ़मिर ! मुझे तुम्हारा क्या फ़ाएदा ! तुम्हारे सामने मेरे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बे अदबी की गई और तुम में से किसी ने उसे नहीं रोका। येह सुन कर फ़ौरन आले आ़मिर के तीन आदमी उठे और क़बीलए बुह़ैरा

[1] ..... اسد الغابة، حرف السين، ۷۰۳۸-سودة القرشية، ۷/ ۱۵۹، ملخصًا

के तीन आदमियों को पकड़ कर उन की ख़ूब दुरगत बनाई ह़ालांकि येह अभी तक मुसलमान भी न हुवे थे मगर उन्हों ने तह़फ़्फ़ुज़े अ़ज़मते रसूल पर जिस जुरअत का मुज़ाहरा किया था इस पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ुश हो कर उन्हें बरकत की दुआ़ दी तो उन के दिलों में इश्के मुस्त़फ़ा की वोह शम्अ़ फ़रोज़ां हुई कि इस्लाम क़बूल कर के बा'द में उन सब ने हुरमते रसूल की पासबानी करते हुवे अपनी जानें अपने आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर क़ुरबान कर दीं।(1)

## ﴾6﴿ मद्ह़े रसूल

मह़बूबे रब्बे दावर, शफ़ीए़ रोज़े मेह़शर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का हर उम्मती पर येह भी ह़क़ है कि वोह आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मद्ह़ो सना का हमेशा ए'लान और चर्चा करता रहे और इन के फ़ज़ाइलो कमालात को अ़लल ए'लान बयान करे।

**प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो !** आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़ज़ाइलो मह़ासिन का ज़िक्रे जमील रब्बुल आ़लमीन और तमाम अम्बियाओ मुर्सलीन عَلَيْهِمُ السَّلَام का मुक़द्दस त़रीक़ा है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने कु़रआने करीम को अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मद्ह़ो सना के मुख़्तलिफ़ रंगा रंग फूलों का एक ह़सीन गुलदस्ता बना कर नाज़िल फ़रमाया है और पूरे क़ुरआने करीम में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ना'त व सिफ़ात की आयाते बय्यिनात इस त़रह़ जग मगा रही हैं जैसे आस्मान पर सितारे

1 ........ اسد الغابۃ،حرف الضاد، ۷۰۷۷-ضباعۃ بنت عامر، ۷/ ۲۱۷ ملخصًا

जग मगाते हैं और गुज़श्ता आस्मानी किताबें भी ए'लान कर रही हैं कि हर नबी व रसूल **अल्लाह** के ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मद्दाह़ व सना ख़्वान और उन के फ़ज़ाइलो महासिन का ख़त़ीब बन कर फ़ज़ाइले मुस्त़फ़ा के फ़ज़्लो कमाल और इन के जाहो जलाल का डंका बजाता रहा। येही वज्ह है कि हज़ारों सह़ाबा व सह़ाबियात ने हर कूचे व बाज़ार और मैदाने कारज़ार में ना'ते रसूल के ऐसे ऐसे अ़ज़ीम शाहकार गुलदस्ते तरतीब दिये कि जिन की ख़ुश्बू आज भी चहार सू फैली हुई है,[1] येही नहीं बल्कि दौरे सह़ाबा से आज तक सरवरे अम्बिया صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़ुश नसीब मद्दाह़ों ने नज़्म व नस्र में ना'ते पाक का इतना बड़ा ज़ख़ीरा जम्अ़ कर दिया है कि इसे इह़ात़ए शुमार में लाना मुमकिन नहीं।

## ﴾7﴿ दुरूद शरीफ़

**प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो!** **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हमें अपने ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ने का हुक्म देते हुवे इरशाद फ़रमाया :

اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ؕ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ﴿۵۶﴾

(پ۲۲، الاحزاب:۵۶)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *बेशक* **अल्लाह** *और उस के फ़िरिश्ते दुरूद भेजते हैं उस ग़ैब बताने वाले (नबी) पर ऐ ईमान वालो उन पर दुरूद और ख़ूब सलाम भेजो।*

[1].....सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शान में मद्ह़ सराई की चीदा चीदा मिसालें दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ रिसाले **सह़ाबियात और मद्ह़ सराई** में मुलाह़ज़ा फ़रमाइये।

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअ़त (जिल्द अव्वल) सफ़ह़ा 75 पर है : जब हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का ज़िक्र आए तो ब कमाले ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ व इन्किसार बा अदब सुने और नामे पाक सुनते ही दुरूद शरीफ़ पढ़ना वाजिब है।

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अह्ले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن **फ़तावा रज़विय्या** में इस मस्अले की तफ़्सील बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं : नामे पाक हुज़ूरे पुरनूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुख़्तलिफ़ जल्सों में जितनी बार ले या सुने हर बार दुरूद शरीफ़ पढ़ना वाजिब है, अगर न पढ़ेगा गुनहगार होगा और सख़्त सख़्त वईदों में गिरिफ़्तार, हां इस में इख़्तिलाफ़ है कि अगर एक ही जल्से में चन्द बार नामे पाक लिया या सुना तो हर बार वाजिब है या एक बार काफ़ी और हर बार मुस्तह़ब है, बहुत उ़लमा क़ौले अव्वल की त़रफ़ गए, उन के नज़्दीक एक जल्से में हज़ार बार कलिमा शरीफ़ पढ़े तो हर बार दुरूद शरीफ़ भी पढ़ता जाए अगर एक बार भी छोड़ा गुनहगार हुवा।

दीगर उ़लमा ने ब नज़रे आसानिये उम्मत क़ौले दुवुम इख़्तियार किया उन के नज़्दीक एक जल्से में एक बार दुरूद अदाए वाजिब के लिये किफ़ायत करेगा, ज़ियादा के तर्क से गुनहगार न होगा मगर सवाबे अ़ज़ीम व फ़ज़्ले जसीम से

बेशक महरूम रहा । बहर ह़ाल मुनासिब येही है कि हर बार "صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم" कहता जाए कि ऐसी चीज़ जिस के करने में बिल इत्तिफ़ाक़ बड़ी बड़ी रह़मतें-बरकतें हैं और न करने में बिलाशुबा बड़े फ़ज़्ल से महरूमी और एक मज़हबे क़वी पर गुनाह व मा'सिय्यत, आ़क़िल का काम नहीं कि इसे तर्क करे ।[1]

**प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो !** सरवरे काइनात, फ़ख़्रे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शाने महबूबिय्यत का क्या कहना ! एक ह़क़ीर व ज़लील बन्दा ख़ुदा के पैग़म्बरे जमील की बारगाहे अ़ज़मत में दुरूद शरीफ़ का हदया भेजता है तो ख़ुदावन्दे जलील इस के बदले में उस बन्दे पर रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम सब को ज़ियादा से ज़ियादा दुरूद शरीफ़ पढ़ने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए । (आमीन)

## ﴾8﴿ क़ब्रे अन्वर की ज़ियारत

सदरुश्शरीआ़ बदरुत्तरीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي बहारे शरीअ़त में फ़रमाते हैं कि ज़ियारते अक़्दस क़रीब ब वाजिब है ।[2] जब कि शैख़ुल ह़दीस ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي **सीरते मुस्त़फ़ा** में फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस

1 .....फ़तावा रज़विय्या, 6 / 222

2 .....बहारे शरीअ़त, फ़ज़ाइले मदीनए त़य्यिबा, 1 / 1221

صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रौज़ए मुक़द्दसा की ज़ियारत सुन्नते मुअक्कदा क़रीब वाजिब है। चुनान्चे, फ़रमाने बारी तआला है :

وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ﴿۶۴﴾ (پ۵، النسآء: ۶۴)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *और अगर जब वोह अपनी जानों पर ज़ुल्म करें तो ऐ महबूब तुम्हारे हुज़ूर हाज़िर हों और फिर* ***अल्लाह*** *से मुआफ़ी चाहें और रसूल उन की शफ़ाअत फ़रमाए तो ज़रूर* ***अल्लाह*** *को बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान पाएं।*

मज़ीद फ़रमाते हैं कि इस आयत में गुनाहगारों के गुनाह की बख़्शिश के लिये अरहमुर्राहिमीन ने तीन शर्तें लगाई हैं : **अव्वल** दरबारे रसूल में हाज़िरी। **दुवुम** इस्तिग़फ़ार। **सिवुम** रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दुआए मग़फ़िरत। येह हुक्म हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाहिरी दुन्यवी हयात ही तक महदूद नहीं बल्कि रौज़ए अक़्दस में हाज़िरी भी यक़ीनन दरबारे रसूल ही में हाज़िरी है। इसी लिये उलमाए किराम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ السَّلَام ने तसरीह फ़रमा दी है कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दरबार का येह फ़ैज़ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वफ़ाते अक़्दस से मुन्क़तेअ नहीं हुवा है। इस लिये जो गुनाहगार क़ब्रे अन्वर के पास हाज़िर हो जाए और वहां खुदा से इस्तिग़फ़ार करे और चूंकि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तो अपनी क़ब्रे अन्वर में अपनी उम्मत के लिये इस्तिग़फ़ार फ़रमाते

ही रहते हैं, लिहाज़ा उस गुनाहगार के लिये मग़फ़िरत की तीनों शर्तें पाई गईं। इस लिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ उस की ज़रूर मग़फ़िरत हो जाएगी। येही वज्ह है कि चारों मज़ाहिब के उ़लमाए किराम ने मनासिके ह़ज व ज़ियारत की किताबों में येह तह़रीर फ़रमाया है कि जो शख़्स भी रौज़ए मुनव्वरा पर ह़ाज़िरी दे उस के लिये मुस्तह़ब है कि इस आयत को पढ़े और फिर ख़ुदा से अपनी मग़फ़िरत की दुआ मांगे। मज़कूरए बाला आयते मुबारका के इ़लावा बहुत सी ह़दीसें भी रौज़ए मुनव्वरा की ज़ियारत के फ़ज़ाइल में वारिद हुई हैं जिन को अ़ल्लामा समहूदी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی ने अपनी किताब **वफ़ाउल वफ़ा** और दूसरे मुस्तनद सलफ़ सालिह़ीन उ़लमाए दीन ने अपनी अपनी किताबों में नक़्ल फ़रमाया है। मसलन फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : مَنْ زَارَ قَبْرِیْ وَجَبَتْ لَہٗ شَفَاعَتِیْ۔ [1] या'नी जिस ने मेरी क़ब्र की ज़ियारत की उस के लिये मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो गई। इसी लिये सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के मुक़द्दस ज़माने से ले कर आज तक तमाम दुन्या के मुसलमान क़ब्रे मुनव्वर की ज़ियारत करते और आप की मुक़द्दस जनाब में तवस्सुल और इस्तिग़ासा करते रहे हैं और اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ क़ियामत तक येह मुबारक सिलसिला जारी रहेगा।[2]

[1] ..... سنن الدارقطنی، کتاب الحج، باب المواقیت، ۱/۲۱۷، حدیث: ۲۶۶۹

[2] .....सीरते मुस्त़फ़ा, स. 848

# सीरते सह़ाबियात की रौशनी में इ़श्क़े महब्बते मुस्त़फ़ा पर मुश्तमिल चन्द बातें

**प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो !** रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से महब्बत की कई अ़लामात हैं, यहां जैल में मुख़्तलिफ़ कुतुब[1] से माख़ूज़ चन्द अ़लामात ज़िक्र की जा रही हैं :

## पहली अ़लामत : कसरते ज़िक्र

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िक्र इस कसरत व लज़्ज़त से किया जाए कि आप के सिवा दिल में किसी की महब्बत बाक़ी रहे न किसी की याद से लुत्फ़ आए।[2] बल्कि ज़िक्रे महबूब के वक़्त अल्फ़ाज़ इस क़दर शीरीं हो जाएं कि उन की ह़लावत व मिठास तादेर कानों में रस घोलती रहे। येही वज्ह है कि सह़ाबियाते त़य्यिबात رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ जब सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का तज़किरा करतीं तो महब्बते सरकार उन के अल्फ़ाज़ से अ़यां होती। जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे अ़त़िया رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا जब भी हुज़ूर सरापा नूर, शाहे ग़यूर

1 .....यहां मुख़्तलिफ़ कुतुब से मुराद येह कुतुब हैं : क़ूतुल क़ुलूब अज़ शैख़ अबू त़ालिब मक्की, इह़याउल उ़लूम अज़ इमाम ग़ज़ाली, अल मवाहिबुल्लदुन्निय्या अज़ इमाम क़स्त़लानी, शर्ह़े मवाहिब अज़ इमाम ज़ुरक़ानी, शिफ़ा अज़ क़ाज़ी इयाज़ व शर्ह़े शिफ़ा अज़ मुल्ला अ़ली क़ारी और सीरते मुस्त़फ़ा अज़ अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी।

2 ..... ماخوذ از المواهب اللدنية، المقصد السابع، الفصل الاول فی وجوب محبته...الخ، ۲/۴۹۵

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़िक्र करतीं तो फ़र्ते मसर्रत से कहतीं : मेरे वालिद आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर क़ुरबान ।[1]

## दूसरी अ़लामत : शौक़े मुलाक़ात

दीदारे सरकार का बहुत ज़ियादा शौक़ हो, क्यूंकि हर मुहि़ब अपने मह़बूब से मुलाक़ात का शौक़ रखता है और बा'ज़ मशाइख़ का तो येह भी कहना है कि मह़ब्बत मह़बूब के शौक़ का ही दूसरा नाम है ।[2] चुनान्चे,

## फ़िराक़े नबी में तड़पने वाली सह़ाबिया

जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस जहाने फ़ानी से पर्दा फ़रमाया तो क़बीलए हाशिम की एक औ़रत ने उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : मुझे एक बार मेरे आक़ा की क़ब्रे अन्वर का दीदार करा दीजिये । क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अ़ज़मते शान के बाइ़स आप की क़ब्रे अन्वर पर पर्दे लटका दिये गए थे और अगर कोई ज़ियारते क़ब्रे अन्वर से मुशर्रफ़ होना चाहता तो उसे सय्यिदा आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की इजाज़त लेना पड़ती क्यूंकि सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप के ही काशानए अक़्दस में मह़्वे आराम थे । चुनान्चे, उम्मुल

[1] ......... نسائی، کتاب الحیض و الاستحاضۃ، باب شھود الحیض . . . الخ، ص ۷۰، حدیث: ۳۸۸

[2] ......... ماخوذ از المواھب اللدنیہ، المقصد السابع، الفصل الاول فی وجوب محبتہ، ۲/ ۴۹۷

मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने उस की ह़ालते ज़ार पर करम फ़रमाते हुवे जूंही क़ब्रे अन्वर के दरमियान ह़ाइल पर्दा हटाया और इ़श्क़े नबी से मा'मूर उस औ़रत की निगाह अपने आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अन्वर पर पड़ी तो वोह अपनी बे पनाह मह़ब्बत और वालिहाना इ़श्क़ के बाइ़स ख़ुद पर क़ाबू न रख पाई और जान से भी अ़ज़ीज़ तर अपने मह़बूब आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की जुदाई पर उस की आंखों से अश्कों का सैलाब जारी हो गया और फिर दरे रसूल पर यूं ही रोते रोते उस की बे क़रार रूह़ को क़फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ करने के बाइ़स क़रार मिल गया।[1]

*आप के इ़श्क़ में ऐ काश ! कि रोते रोते*
*येह निकल जाए मेरी जान मदीने वाले*[2]
*तेरे क़दमों पर सर हो और तारे ज़िन्दगी टूटे*
*येही अन्जामे उल्फ़त है येही मरने का ह़ासिल है*[3]

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## तीसरी अ़लामत : इत्तिबाए शरीअ़त

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पैरवी करे और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतों का आ़मिल हो, आप के अफ़्आ़लो

1 ..... شرح الشفا، القسم الثانی، الباب الثانی، فصل فیما روی السلف...الخ، ۲/۴۴
نسیم الریاض، القسم الثانی، الباب الثانی، فصل فیما روی السلف...الخ، ۴/۴۳۰
2 .....वसाइले बख़्शिश, स. 305
3 .....सह़ाबए किराम का इ़श्क़े रसूल, स. 153

अक़्वाल का इत्तिबाअ़ करे, आप के हुक्म को बजा लाए और नवाही से इजतिनाब करे और हर तंगी व आसानी में आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सीरते त़य्यिबा से ह़ासिल मदनी फूलों को पेशे नज़र रखे, नीज़ जिस बात को आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मशरूअ़ क़रार दिया और उस पर अ़मल की तरग़ीब व तम्बीह फ़रमाई हो उसे अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशात पर तरजीह़ दे ।[1] चुनान्चे, हर उम्मती के लिये त़ाअ़ते रसूल की क्या शान होनी चाहिये इस का जल्वा देखना हो तो सह़ाबियाते त़य्यिबात رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ की सीरत का मुत़ालआ़ कीजिये, क्यूंकि वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों पर अ़मल की सरापा मिसाल थीं, उन्हों ने कभी भी किसी भी ह़ाल में सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के किसी हुक्म पर अ़मल से मुंह मोड़ा न इस सिलसिले में कभी किसी रिश्ते को कोई अहम्मिय्यत दी । जैसा कि उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने अपने वालिदे माजिद ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के इन्तिक़ाल फ़रमाने के बा'द और उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते जह़श رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने अपने भाई के विसाल के (तीन दिन) बा'द ख़ुश्बू लगाई और इरशाद फ़रमाया : ख़ुदा की क़सम ! मुझे इस की ज़रूरत न थी मगर मैं ने सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना है कि जो औ़रत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और यौमे आख़िरत पर ईमान रखती है उस के लिये ह़लाल नहीं कि वोह किसी के मरने का सोग तीन रातों से ज़ियादा करे ।

[1] ..... ماخوذ از کتاب الشفا، القسم الثانی، الباب الثانی، فصل فی علامۃ محبتہ، ۲/۲۲

सिवाए शौहर के, कि उस के सोग की मुद्दत चार माह दस दिन है।[1] इसी त़रह़ मरवी है कि एक बार उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ख़िदमते सरापा ग़ैरत में आप के भाई ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बेटी ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ह़ाज़िर हुईं जिन्हों ने सर पर बारीक दूपट्टा ओढ़ा हुवा था तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने उस दूपट्टे को (शरअ़न ममनूअ़ होने की वज्ह से) फाड़ कर उन्हें मोटा दूपट्टा ओढ़ा दिया।[2]

## चौथी अ़लामत : क़ुर्बे महबूब की कोशिश

महब्बते मुस्त़फ़ा के बाइ़स हर शै से नाता तोड़ कर इस त़रह़ सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का बन जाइये कि उन के सिवा कहीं सुकून मिले न चैन, बल्कि बारगाहे ह़बीब में ही दिल को इत़मीनान ह़ासिल हो या'नी फ़िक्र आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़ुर्ब के ह़ुसूल में मगन रहे तो नज़र में हमेशा आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जल्वे समाए हों। न इस पल चैन आए न उस पल क़रार आए।[3] जैसा कि शर्मो ह़या के पैकर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अख़्याफ़ी (या'नी मां जाई) बहन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे कुल्सूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के मुतअ़ल्लिक़ मरवी है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का

[1] ..... ابو داود، کتاب الطلاق، باب احداد المتوفی عنها زوجها، ص۳۶۸، حدیث: ۲۲۹۹ ملتقطًا

[2] ..... موطا امام مالك، کتاب اللباس، باب ما یکرہ للنساء... الخ، ص۴۸۵، حدیث: ۱۷۳۹

[3] ..... ماخوذ از قوت القلوب، الفصل الثانی والثلاثون، ذکر احکام المحبة... الخ، ۲/۸۹

शुमार भी उन ख़ुश बख़्तों में होता है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मदीने शरीफ़ हिजरत फ़रमाने से पहले पहले दामने मुस्त़फ़ा से वाबस्ता हो कर असीरे गेसूए मुस्त़फ़ा तो हो गए थे मगर किसी वज्ह से हिजरत न कर सके और यूं उन की निगाहें सुब्हो शाम दीदारे मुस्त़फ़ा की लज़्ज़तों से मह़रूम हो गईं। दुखी दिलों के चैन, सरवरे कौनैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के निगाहों से ओझल होने ने इन के दिलों में फ़िराक़ व जुदाई की वोह आग भड़काई कि मौक़अ़ मिलते ही येह लोग आहिस्ता आहिस्ता सूए मक़ामे मुस्त़फ़ा रवाना होने लगे।

*करे चारह साज़ी ज़ियारत किसी की — भरे ज़ख़्म दिल के मलाह़त किसी की*
*चमक कर येह कहती है त़लअ़त किसी की — कि दीदारे ह़क़ है ज़ियारत किसी की* [1]

ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे कुल्सूम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا के दिलो दिमाग़ इ़श्क़ो मह़ब्बते मुस्त़फ़ा की आग में ख़ाकिस्तर हुवे जा रहे थे तो आंखें मह़बूबे ख़ुदा के दीदार के लिये बे क़रार थीं, आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا भी हर दम सूए मुस्त़फ़ा रवानगी के लिये किसी मौक़अ़ की तलाश में थीं, आख़िर जब दिले मुज़्त़र (बेचैन दिल) पर क़ाबू न रहा तो दरे ह़बीब पर ह़ाज़िरी के लिये अ़जब ह़ीले से काम लिया। उधर ह़ालात भी काफ़ी साज़गार थे क्यूंकि सुल्ह़े हुदैबिय्या के बा'द अह्ले मक्का को येह इत्मीनान हो चुका था कि अब अगर किसी ने हिजरत की भी तो उसे वापस ले आया जाएगा, लिहाज़ा उन की इस बे फ़िक्री के बाइ़स सय्यिदतुना उम्मे कुल्सूम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا को घर से बाहर निकलने का मौक़अ़ मिल

[1]....ज़ौक़े ना'त, स. 166

गया और उन्हों ने इस से भरपूर फ़ाएदा उठाने का सोचा और सब से पहले वोह मक्कए मुकर्रमा के क़रीब ही वाक़ेअ़ एक बस्ती में अपने चन्द रिश्तेदारों के हां गईं और तीन चार दिन क़ियाम के बा'द वापस लौट आईं ताकि घरवालों को शक न हो और उन का दोबारा देहात जाना उन्हें ना गवार न गुज़रे। वापसी के बा'द जब आप ने देखा कि घर के ह़ालात साज़गार हैं और उन का देहात जाना किसी को मा'यूब नहीं लगा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने सूए मदीना रख़्ते सफ़र बांधा और तने तन्हा घर से इस अन्दाज़ में रवाना हुईं कि सब को येही लगे कि देहात की त़रफ़ जा रही हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के इ़श्के़ सरवर के क्या कहने ! आप रास्ते से आगाह थीं न रास्ते की मुश्किलात से ब ख़ूबी वाक़िफ़ थीं। बस रुख़ सूए मदीना किया और पैदल ही चल पड़ीं।[1]

***उन के दर पे मौत आ जाए तो जी जाऊं ह़सन***
***उन के दर से दूर रह के ज़िन्दगी अच्छी नहीं***[2]

1 ...**प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो** ! इस वाक़िए़ से किसी के ज़ेह्न में येह सुवाल पैदा हो सकता है कि औ़रत को बिग़ैर मह़रम के तीन दिन या ज़ियादा, बल्कि एक दिन की राह जाना भी नाजाइज़ है। (बहारे शरीअ़त, 1/752) तो फिर ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे कुल्सूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने मक्कए मुकर्रमा से मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعۡظِیۡمًا की त़रफ़ हिजरत का सफ़र तन्हा और बिग़ैर किसी मह़रम के क्यूं किया ? तो इस का जवाब देते हुवे मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الۡحَنَّان फ़रमाते हैं : इस मुमानअ़त के ह़ुक्म से मुहाजिरा और कुफ़्फ़ार की क़ैद से छूटने वाली औ़रत ख़ारिज है कि येह दोनों औ़रतें बिग़ैर मह़रम अकेली ही दारुस्सलाम की त़रफ़ सफ़र कर सकती हैं बल्कि येह सफ़र उन पर वाजिब है।

(मिरआतुल मनाजीह़, 4 / 90)

2 .....ज़ौक़े ना'त, स. 133

अभी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا कुछ दूर ही गई थीं कि करम हुवा और ताईदे ग़ैबी ने कुछ यूं दस्त्गीरी फ़रमाई कि क़बीलए बनी ख़ुज़ाआ़ का एक शख़्स रास्ते में आप को मिला, जिस ने एक बा पर्दा मुसलमान ख़ातून को यूं सूए त़ैबा आ़ज़िमे सफ़र देख कर गवारा न किया कि वोह अकेली इस क़दर त़वील सफ़र तन्हा और पैदल करें। चुनान्चे, उस ने अपना ऊंट पेश किया और इस त़रह़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا इ़श्क़ो मस्ती से सरशार जज़्बात ले कर मन्ज़िलों पे मन्ज़िलें त़ै करती आख़िर दरे रसूल पर जा पहुंचीं।[1]

*आस्ताने पे तेरे सर हो अजल आई हो  और ऐ जाने जहां तू भी तमाशाई हो*[2]

## पांचवीं अ़लामत : जानो माल की क़ुरबानी

इ़श्के़ मुस्त़फ़ा में जानो माल की क़ुरबानी पेश करना पड़े तो क़त़ई त़ौर पर दरेग़ न किया जाए बल्कि हर उस वासित़े व ज़रीए़ को ख़त्म कर दिया जाए जो हुसूले रिज़ा व क़ुर्बे मुस्त़फ़ा से मानेअ़ हो[3] और इस निदाए पुर मसर्रत पर यक़ीन रखा जाए कि

*की मुह़म्मद से वफ़ा तू ने तो हम तेरे हैं*
*येह जहां चीज़ है क्या लौह़ो क़लम तेरे हैं*

**प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो !** सह़ाबियाते त़य्यिबात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُنَّ हमेशा राहे ख़ुदा व मुस्त़फ़ा में अपने तन मन

[1] .....صفة الصفوة، ذكر المصطفيات من طبقات الصحابيات، ام كلثوم بنت عقبة بن ابي معيط، المجلد الاول، ۲/۳۹ ملخصاً

[2] .....ज़ौक़े ना'त, स. 145

[3] ..... قوت القلوب، الفصل الثاني والثلاثون، ذكر احكام المحب ...الخ، ۲/۸۹

धन को क़ुरबान करने के लिये तय्यार रहतीं और इस सिलसिले में कभी किसी की परवा न करतीं। क्यूंकि वोह समझती थीं :

*निगाहे इ़श्क़ो मस्ती में वोही अव्वल, वोही आख़िर*

*वोही क़ुरआं वोही फ़ुरक़ां, वोही यासीं, वोही त़ाहा*

येही वज्ह है कि जब उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने उमरा व रऊसाए क़ुरैश पर सरवरे काइनात, फ़ख़्रे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ निकाह़ को तरजीह़ दी तो बा'ज़ लोगों ने इसे मा'यूब जाना और चेमेगोइयां करने लगे। जब आप को मा'लूम हुवा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने तमाम रऊसाए मक्का को ह़रम शरीफ़ में बुलाया और उन्हें गवाह बना कर अपना सारा माल महबूबे रब्बे दावर, शफ़ीए रौज़े महशर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़दमों पर निछावर कर दिया।[1] इस की ताईद उस ह़दीसे पाक से भी होती है जिस में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! ख़दीजा से बेहतर मुझे कोई बीवी नहीं मिली, जब सब लोगों ने मेरे साथ कुफ़्र किया उस वक़्त वोह मुझ पर ईमान लाईं और जब सब लोग मुझे झुटला रहे थे उस वक़्त उन्हों ने मेरी तस्दीक़ की और **जिस वक़्त कोई शख़्स मुझे कोई चीज़ देने के लिये तय्यार न था उस वक़्त ख़दीजा ने मुझे अपना सारा सामान दे दिया**

[1] .....نزھۃ المجالس، باب مناقب فی امھات المومنین، الجزء الثانی، ص ۳۹۸

और उन्हीं के शिकम से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे औलाद अ़ता फ़रमाई ।[1]

## छटी अ़लामत : हुक्मे महबूब पर अ़मल

हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन मुहम्मद क़स्तलानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی अल मवाहिबुल्लदुन्निय्या में फ़रमाते हैं कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का कुर्ब बख़्शने वाले उमूर को नफ़्सानी ख़्वाहिशात पर मब्नी उमूर पर तरजीह़ दी जाए । या'नी जिस बात को आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मशरूअ़ फ़रमाया और उस पर अ़मल की तरग़ीब व तम्बीह फ़रमाई हो उस से राज़ी रहा जाए और उसे अपनी नफ़्सानी व शहवानी ख़्वाहिशात पर इस त़रह़ तरजीह़ दी जाए कि दिल में कोई तंगी महसूस न हो । जैसा कि इरशादे बारी तआ़ला है :

فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ حَتّٰى يُحَكِّمُوْكَ فِيْمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوْا فِيْۤ اَنْفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ﴿۶۵﴾

(پ۵، النسآء: ۶۵)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *ऐ महबूब तुम्हारे रब की क़सम वोह मुसलमान न होंगे जब तक अपने आपस के झगड़े में तुम्हें ह़ाकिम न बनाएं फिर जो कुछ तुम हुक्म फ़रमा दो अपने दिलों में उस से रुकावट न पाएं और जी से मान लें ।*

मा'लूम हुवा कि जो शख़्स हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़ैसले से दिल में तंगी महसूस करे और इसे तस्लीम न करे

[1] ..... الاستیعاب، کتاب النساء و کناھن، باب الخاء، ۳۳۲۳-خدیجۃ بنت خویلد، ۲/۵۰۹

उस का ईमान सल्ब कर लिया जाता है । नीज़ ह़ज़रते सय्यिदुना ताजुद्दीन बिन अ़त़ाउल्लाह शाज़िली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं कि आयते मुबारका में इस बात पर दलालत है कि ह़क़ीक़ी ईमान उसी शख़्स को ह़ासिल होता है जो क़ौलो फ़े'ल, अ़मल करने व तर्क करने और महब्बत व बुग़्ज़ हर ए'तिबार से **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم का हुक्म माने । मज़ीद फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन लोगों से जो सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم के फ़ैसले को नहीं मानते या मानते हैं लेकिन दिल में ह़रज भी मह़सूस करते हैं, सिर्फ़ ईमान की नफ़ी नहीं की बल्कि इस पर उस रबूबिय्यत की क़सम भी याद फ़रमाई है जो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم के साथ ख़ास है ।(1)

## कंगन उतार कर फैंक दिये

ह़ज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते यज़ीद अन्सारिया رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا बड़ी अ़क़्ल मन्द और बहादुर सह़ाबिया थीं, आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने जंगे यरमूक में नौ काफ़िरों को ख़ैमे की लकड़ी से वासिले जहन्नम कर दिया था ।(2) आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं कि जब मैं बारगाहे रिसालत में बैअ़त के लिये ह़ाज़िर हुई तो उस वक़्त मैं ने सोने के कंगन पहने हुवे थे । जब क़रीब पहुंची तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم ने उन की चमक देख कर इरशाद

[1] ........ماخوذاز المواهب اللدنية، المقصد السابع، الفصل الاول فی وجوب محبته...الخ، ۲/ ۴۹۳
[2] ........اشعة اللمعات، ضیافت کا بیان، تیسری فصل، ۵/ ۵۱۳

फ़रमाया : ऐ अस्मा ! इन्हें उतार कर फैंक दो ! क्या तुम इस बात से नहीं डरतीं कि (अगर तुम ने इन की ज़कात अदा न की तो बरोज़े क़ियामत) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें आग के कंगन पहनाएगा। (फ़रमाती हैं) मैं ने फ़ौरन कंगन उतार कर फैंक दिये और मा'लूम नहीं उन्हें किस ने उठाया ?[1]

## चादरें फाड़ कर दूपट्टे बना लिये

سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो !** बिलाशुबा हुक्मे सरकार पर सरे तस्लीम ख़म करने की येह एक आ'ला मिसाल है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दहने मुबारक से हुक्म इरशाद होते ही ह़ज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते यज़ीद अन्सारिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने कंगन उतार कर फैंक दिये और फिर पलट कर येह भी न देखा कि उन्हें किस ने उठाया है। येह सिर्फ़ आप ही नहीं थीं कि जिन्हों ने ऐसा किया बल्कि सह़ाबियाते त़य्यिबात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ की ह़याते त़य्यिबा में ऐसी मिसालें बहुत ज़ियादा हैं कि उन्हों ने अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशात के बर अ़क्स हुक्मे सरकार पर बिग़ैर किसी लैतो ला'ल (टाल मटोल, उ़ज़्र, बहाने) के फ़ौरन अ़मल कर के दिखाया। जैसा कि उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि जब पर्दे का हुक्म नाज़िल हुवा तो सह़ाबियाते त़य्यिबात ने अपनी चादरों और तहबन्दों को फाड़ कर दूपट्टे बना लिये।[2]

[1] .....مسند احمد، مسند القبائل، اسماء ابنة یزید، ۱۱/۳۲۶، حدیث: ۲۸۳۳۰

[2] ..... ابو داود، کتاب اللباس، باب فی قولہ تعالی یدنین... الخ، ص ۶۴۵، حدیث: ۴۱۰۰ ملخصًا

## हुक्मे सरकार बजा लाने की एक और मिसाल

ह़ज़रते सय्यिदुना बरज़ा अस्लमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना जुलैबीब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक ख़ुश मिज़ाज शख़्स थे, मगर उन की एक आ़दत ऐसी थी जो मुझे पसन्द न थी। लिहाज़ा मैं ने अपने घरवालों को सख़्ती से मन्अ़ कर दिया कि आज के बा'द वोह तुम्हारे पास न आएं। (उन दिनों) अन्सार का चूंकि येह मा'मूल था कि किसी लड़की की शादी उस वक़्त तक न करते जब तक येह मा'लूम न कर लेते कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी को उस के रिश्ते में दिलचस्पी है या नहीं ? चुनान्चे, एक मरतबा जब आक़ाए नामदार, नबियों के सालार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक अन्सारी शख़्स को फ़रमाया : मुझे अपनी बेटी का रिश्ता दे दो। तो उस ने ख़ुश हो कर कहा : येह तो हमारे लिये क़ाबिले शरफ़ और ए'ज़ाज़ की बात है कि आप हमारी बेटी का रिश्ता ले रहे हैं। इस पर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मैं अपने लिये इस रिश्ते का ख़्वाहिश मन्द नहीं हूं। अन्सारी सह़ाबी ने अ़र्ज़ की : फिर किस के लिये ? इरशाद फ़रमाया : जुलैबीब के लिये। तो अ़र्ज़ करने लगे : मैं इस बारे में लड़की की मां से मश्वरा करना चाहता हूं। लिहाज़ा वोह अन्सारी सह़ाबी हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इजाज़त ले कर अपनी बीवी के पास आए और जब उसे बताया कि **अल्लाह** के नबी तुम्हारी बेटी के रिश्ते में दिलचस्पी रखते हैं तो उस ने ख़ुशी का इज़हार करते हुवे कहा येह तो हमारे लिये बाइ़से सद इफ़्तिख़ार है। मगर जब उन्हों ने बताया कि हुज़ूर

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने लिये नहीं बल्कि जुलैबीब के लिये रिश्ता चाहते हैं तो लड़की की मां ने इन्कार कर दिया। येह तमाम बातें उन की बेटी भी सुन रही थी कि जिस के लिये येह रिश्ता आया था। चुनान्चे, जब उस का बाप इन्कार करने के लिये दरबारे रिसालत में जाने लगा तो आक़ाए दो जहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रज़ा चाहने वाली वोह आ़शिक़ा सहा़बिया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا अपने वालिदैन से अ़र्ज़ करने लगी : क्या आप लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हुक्म को रद करना चाहते हैं ? अगर उन की इस रिश्ते में रज़ा है तो आप मुझे मेरे सरकार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सिपुर्द कर दें वोह कभी मुझे ज़ाएअ़ नहीं होने देंगे। उस की येह बात सुन कर आख़िर वालिदैन इस रिश्ते के लिये राज़ी हो गए और बारगाहे बेकस पनाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! जब आप राज़ी हैं तो हम भी राज़ी हैं। फिर हु़ज़ूर ने ह़ज़रते जुलैबीब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की शादी ख़ाना आबादी अपनी उस सहा़बिया से फ़रमा दी जिस ने अपनी ज़ात पर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रज़ा को तरजीह़ दी थी।(1)

*ख़ुदा की रज़ा चाहते हैं दो आ़लम*
*ख़ुदा चाहता है रज़ाए मुह़म्मद*

[1] ......مسند احمد، مسند البصریین، حدیث برزة الاسلمی، ۸/۱۱۷، حدیث: ۲۰۳۱۵ ملتقطًا

*ख़ुदा उन को किस प्यार से देखता है*

*जो आंखें हैं महवे लिक़ाए मुह़म्मद*[1]

## सातवीं अ़लामत : महब्बत व नफ़रत का मे'यार

दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बिइज़्ने परवर दगार, मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की याद को सीने में बसाने वालों से महब्बत की जाए और उन की हम नशीनी को सआ़दत समझा जाए जब कि दुश्मनाने रसूल से क़त़ई कोई तअ़ल्लुक़ रवा न रखा जाए।[2] जैसा कि मरवी है कि एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ईमान लाने से पहले मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا में ह़ाज़िर हुवे तो अपनी बेटी उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से मिलने उन के मकान पर गए। जब उन्हों ने बिस्तरे रसूल पर बैठना चाहा तो सय्यिदा उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने जल्दी से बिस्तर उठा लिया, ह़ैरान हो कर बोले : बेटी ! तुम ने बिस्तर क्यूं उठा लिया ? क्या बिस्तर को मेरे लाइक़ नहीं समझा ? या मुझ को इस बिस्तर के क़ाबिल नहीं जाना ? उम्मुल मोमिनीन ने जवाब दिया : येह बिस्तर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का है और आप मुशरिक व नापाक हैं, इस लिये मेरे दिल ने गवारा न किया कि आप इस पर बैठें।[3]

---

1 .....ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 65

2 .....माख़ूज़ अज़ सीरते मुस्त़फ़ा, स. 836

3 ..... شرح الزرقانی، المقصد الاول، کتاب المغازی، ذکر خمس سرایا بنی خیبر والعمرۃ باب غزوۃ الفتح الاعظم، ۳/۳۸۵

## आठवीं अ़लामत : राहे ख़ुदा के मसाइब पर सब्र

राहे मह़ब्बत में दरपेश मसाइब पर सब्र किया जाए और कभी भी ह़र्फ़े शिकायत ज़बान पर न आए। क्यूंकि मह़ब्बते मुस्त़फ़ा से बन्दे को एक ऐसी लज़्ज़त ह़ासिल होती है कि बन्दा हर क़िस्म के मसाइब को भूल जाता है और इन मसाइब से जो तक्लीफ़ दूसरे लोगों को पहुंचती है वोह इसे नहीं पहुंचती।[1] जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे अ़म्मार सुमय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के मुतअ़ल्लिक़ मरवी है कि जब आप असीरे गेसूए मुस्त़फ़ा हुईं तो कुफ़्फ़ारे बद अत़्वार ने आप पर ज़ुल्मो सितम की ह़द कर दी मगर आप ने अपने दिल में फ़रोज़ां (रौशन) इ़श्क़े रसूल की शम्अ़ को ज़ुल्मतों की आंधियों से बुझने न दिया और मौत का अबदी जाम नोश फ़रमा लिया। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने इस्ह़ाक़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الرَّزَّاق फ़रमाते हैं : मुझे आले अ़म्मार बिन यासिर के लोगों ने बताया कि ह़ज़रते सय्यिदतुना सुमय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को आले बनू मुग़ीरा इस्लाम लाने की वज्ह से ईज़ाएं देते थे ताकि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इन्कार कर दें, मगर आप उन के बात़िल मा'बूदों का इन्कार करती रहीं यहां तक कि उन्हों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को शहीद कर दिया। रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अ़म्मार, इन की वालिदा और इन के वालिद को मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا के तपते सह़रा

[1] ..... شرح الزرقانی، المقصد السابع، الفصل الاول فی وجوب محبتہ... الخ، ۹/۱۳۱

में मक़ामे अब्तह़ पर ईज़ाएं पाते देखते तो इरशाद फ़रमाते : ऐ आले यासिर ! सब्र करो ! तुम्हारे लिये जन्नत का वा'दा है।[1] ह़ज़रते सुमय्या बिन्ते ख़ुब्बात़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने मज़लूमाना शहादत के इलावा और भी सख़्तियां झेली थीं, मसलन इन को लोहे की ज़िर्ह पहना कर सख़्त धूप में खड़ा कर दिया जाता ताकि धूप की गर्मी से लोहा तपने लगे। यहां तक कि इन्हों ने सब से बड़े दुश्मने इस्लाम अबू जह्ल के हाथों शहादत को क़बूल कर लिया मगर इस्लाम से मुंह न मोड़ा।[2]

## नवीं अ़लामत : तबर्रुकाते मुक़द्दसा की ता'ज़ीम

जिन चीज़ों और लोगों को सरवरे काइनात, फ़ख़्रे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से निस्बत व तअ़ल्लुक़ ह़ासिल है उन सब से मह़ब्बत की जाए और उन का अदबो एह़तिराम मल्ह़ूज़े ख़ात़िर रखा जाए। या'नी सह़ाबए किराम, अज़्वाजे मुत़ह्हरात, अह्ले बैते अत़ह़ार رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن शहरे मदीना, क़ब्रे अन्वर, मस्जिदे नबवी, आप के आसारे शरीफ़ा व मशाहिदे मुक़द्दसा, क़ुरआने मजीद व अह़ादीसे मुबारका वग़ैरा सब की ता'ज़ीम व तौक़ीर और इन का अदबो एह़तिराम किया जाए।[3] जैसा कि एक सह़ाबिया ह़ज़रते सय्यिदतुना कब्शा अन्सारिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के घर ख़ातमुल मुर्सलीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

[1] ..... الاصابة، کتاب النساء، حرف السین، ۱۱۳۴۲-سمیہ بنت خباط، ۸/ ۲۰۹

[2] ..... اسد الغابة، حرف السین، ۷۰۲۱-سمیہ ام عمار، ۷/ ۱۵۳

[3].....सीरते मुस्त़फ़ा, स. 836

तशरीफ़ ले गए और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन के हां मौजूद मश्कीज़े से मुंह लगा कर पानी नोश फ़रमाया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا फ़रमाती हैं : मैं ने उस मशक का मुंह काट कर (बत़ौरे तबर्रुक) अपने पास रख लिया।(1)

## मूए मुबारक से सह़ाबियात की मह़ब्बत

**प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो**! ह़ज़रते सय्यिदतुना कब्शा अन्सारिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की मह़ब्बते मुस्त़फ़ा के क्या कहने ! येह सिर्फ़ आप ही नहीं जिन्हों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से निस्बत रखने वाली चीज़ों को अपने पास बत़ौरे तबर्रुक रख लिया था। बल्कि कई सह़ाबियात ऐसी हैं जिन्हों ने सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से निस्बत रखने वाली चीज़ों को सारी ज़िन्दगी अपना मताए़ ह़यात जान कर सीने से लगाए रखा। जैसा कि हुदैबिय्या के मक़ाम पर ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बाल मुबारक बनवाए तो वोह तमाम मूए मुबारक एक सब्ज़ दरख़्त पर डाल दिये गए, जहां से सह़ाबए किराम عَلَیْھِمُ الرِّضْوَان ने बत़ौरे तबर्रुक उन्हें अपने पास रख लिया। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे अ़म्मारा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا फ़रमाती हैं कि मैं ने भी चन्द बाल ह़ासिल किये थे। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द जब कोई बीमार होता तो मैं उन मुबारक बालों को पानी में डुबो कर पानी मरीज़ को पिलाती तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे सिह़्ह़तयाब फ़रमा देता।(2)

[1] ........ ترمذی، کتاب الاشربۃ، باب ما جاء فی الرخصۃ فی ذلک، ص ۴۶۵، حدیث: ۱۸۹۲
[2] ........ مدارج النبوت، قسم سوم، وصل کشتن صحابہ... الخ، حصہ دوئم، ص ۲۱۷

## उम्र भर हार गले से न उतारा

ग़ज़वए ख़ैबर में रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने क़बीलए बनी ग़िफ़्फ़ार की एक सहाबिया को अपने दस्ते मुबारक से एक हार पहनाया था। वोह इस की इतनी क़द्र करती थीं कि उम्र भर गले से जुदा न किया और जब इन्तिक़ाल फ़रमाने लगीं तो वसिय्यत की, कि हार भी उन के साथ दफ़्न किया जाए।[1]

## सरकार के पसीने से सहाबियात की महब्बत

ख़ादिमे रसूल हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : हुज़ूर ख़ातमुल मुर्सलीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमारे यहां तशरीफ़ लाए और क़ैलूला फ़रमाया (या'नी दोपहर में कुछ देर आराम किया)। हालते ख़्वाब में जनाबे रिसालत मआब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को पसीना आ गया, मेरी वालिदए मोहतरमा (हज़रते सय्यिदतुना उम्मे सुलैम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا) ने एक शीशी ली और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पसीनए मुबारक उस में डालना शुरूअ कर दिया। जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बेदार हुवे तो दरयाफ़्त फ़रमाया : ऐ उम्मे सुलैम ! येह क्या कर रही हो ? उन्हों ने अ़र्ज़ की : येह आप का पसीना है हम इस को अपनी ख़ुश्बू में डालती हैं और येह सब ख़ुश्बूओं से उ़म्दा ख़ुश्बू है। एक रिवायत में है कि आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हम अपने

[1] ..... مسند احمد، مسند النساء، حدیث امرأة من بني غفار، ۱۱/۲۰۱، حدیث: ۲۷۸۹۷ ملتقطًا

बच्चों के लिये आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पसीनए मुबारक से बरकत की उम्मीद रखते हैं। तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम ठीक करती हो।[1]

## करमे सरकार की मुश्ताक़

**प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो !** सहाबियाते तय्यिबात رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ करमे सरकार की इस क़दर मुश्ताक़ थीं कि वोह हर वक़्त मौक़अ की तलाश में रहतीं। जैसा कि हज़रते सय्यिदतुना उम्मे आमिर अस्मा बिन्ते यज़ीद अशहलिय्या رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से मरवी है कि एक बार मैं ने आक़ाए नामदार, रसूलों के सालार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को क़रीब की एक मस्जिद में नमाज़े मग़रिब अदा फ़रमाते देखा तो अपने घर से गोश्त और रोटियां ले कर हाज़िरे ख़िदमत हुई और अर्ज़ की : मेरे मां बाप आप पर क़ुरबान ! हुज़ूर रात का खाना तनावुल फ़रमाइये। चुनान्चे, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम ले कर खाओ। आप फ़रमाती हैं : उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ आए हुवे तमाम सहाबए किराम और घरवालों से जो वहां हाज़िर थे सब ने मिल कर खाना तनावुल फ़रमाया मगर मैं ने देखा कि कुछ बोटियां जूं की तूं पड़ी थीं और बहुत सी रोटियां भी बच गईं, हालांकि खाने वाले 40 अफ़राद थे। फिर वापसी पर हुज़ूर ने मेरे पास मौजूद एक पुरानी मशक से पानी नोश फ़रमाया और तशरीफ़ ले गए। मैं ने उस पर रोग़न मल

[1] .....مسلم، کتاب الفضائل، باب طیب عرق النبی والتبرک بہ، ص ۹۱۳، حدیث: ۲۳۴۱

कर अपने पास बतौरे तबर्रुक महफ़ूज़ कर लिया, इस के बा'द हम उस का पानी बीमारों और मरने वालों (या'नी क़रीबुल मौत लोगों) को बरकत के लिये पिलाया करते थे।(1)

## इश्क़ और आ़शिक़ाने रसूल के मुतअ़ल्लिक़ चन्द बातें

**प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो** ! याद रखिये !

- आ़शिक़ाने रसूल राहे इश्क़ में एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करते हैं।
- इ़बादत गुज़ार इश्क़ो मह़ब्बत की नसीमे सुब्ह़ से राह़त पाते हैं।
- इश्क़ो मह़ब्बते रसूल आ़शिक़ाने रसूल के दिलों की गि़ज़ा, अरवाह़ का रिज़्क़ और आंखों की ठन्डक है।
- इश्क़ो मह़ब्बते रसूल से मह़रूम शख़्स मुर्दों में शुमार होता है।
- इश्क़ो मह़ब्बत के नूर से मुनव्वर आ़शिक़ाने रसूल कभी तारीकियों के समन्दर में ग़र्क़ नहीं होते।
- इश्क़ो मह़ब्बते रसूल वोह शिफ़ा है जिस से मह़रूम शख़्स का दिल बीमारियों का गढ़ बन जाता है।
- इश्क़ो मह़ब्बते रसूल की लज़्ज़त से जो आश्ना नहीं उन की ज़िन्दगी ग़मों और तकालीफ़ का शिकार रहती है।
- इश्क़ो मह़ब्बते रसूल ईमान, आ'माल और मक़ामात की रूह़ है जिस के बिग़ैर येह तमाम चीज़ें ऐसे जिस्म की त़रह़ हैं जिस में रूह़ न हो।
- इश्क़ो मह़ब्बते रसूल मह़बूबे ख़ुदा की त़रफ़ सफ़र जारी रखने वाले आ़शिक़ाने रसूल की सुवारी है।

(1) ........ الطبقات الکبری لابن سعد، تسمیہ نساء الانصار... الخ، ۴۲۹۲-ام عامر اشھلیة، ۸/ ۳۴۴

❀☞ इ़श्क़ो मह़ब्बते रसूल से फ़ैज़याब होना फ़ज़्ले ख़ुदावन्दी है।

❀☞ इ़श्क़ो मह़ब्बते रसूल की आग में जलने वाले आ़शिक़ाने रसूल को जहन्नम की आग न जलाएगी। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

❀☞ इ़श्क़ो मह़ब्बते रसूल यक़ीन व ईमान को दरजए कमाल तक पहुंचाती है।

❀☞ इ़श्क़ो मह़ब्बते रसूल की वज्ह से आ़शिक़ाने रसूल की ज़बानें हर वक़्त तज़किरए मह़बूबे ख़ुदा में मसरूफ़ रहती हैं।

❀☞ इ़श्क़ो मह़ब्बते रसूल से सरशार आ़शिक़ाने रसूल का ज़िक्रे ख़ुदा व मुस्त़फ़ा में मश्ग़ूल होना तौफ़ीक़े ख़ुदावन्दी है।

## इ़श्के़ रसूल की दौलत मिल गई

कहरोड़ पका (लूधरां, पंजाब) डाकख़ाना ढनोट की मुक़ीम इस्लामी बहन का बयान कुछ यूं है कि मैं नमाज़ों की अदाएगी से मह़रूम थी। फ़िल्में-ड्रामे देख कर अपना नामए आ'माल आलूदा कर रही थी, ख़ौफ़े ख़ुदा से आश्ना थी न इ़श्के़ मुस्त़फ़ा की ह़लावत से आगाह। ख़ुश क़िस्मती से दा'वते इस्लामी से वाबस्ता ह़या के जज़्बे से मा'मूर इस्लामी बहनों की रफ़ाक़त क्या मिली ! मेरी अ़मल से आ़री ज़िन्दगी सुन्नतों से आबाद हो गई, सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त में ख़ौफ़े ख़ुदा और इ़श्के़ मुस्त़फ़ा के रूह़ परवर मनाज़िर देख कर मेरे दिल में भी ख़ौफ़े ख़ुदा और इ़श्के़ मुस्त़फ़ा की वोह शम्अ़ फ़रोज़ां (रौशन) हुई कि इस की किरनों से न सिर्फ़ मेरा ज़ाहिर रौशन हो गया बल्कि मेरा बात़िन भी जगमगा उठा। यहां तक कि अब मेरा उठना-बैठना सोना-जागना सुन्नतों के

ताबेअ़ हो गया है, ज़बान पर सुन्नतों का चर्चा होता है तो कान सिर्फ़ ना'ते रसूले मक़्बूल सुनना पसन्द करते हैं। जब ना'त शरीफ़ के मीठे मीठे बोल कानों के ज़रीए़ दिलो दिमाग़ तक पहुंचते हैं तो इ़श्क़े रसूल में बे क़रारी व बे ख़ुदी की एक ख़ास कैफ़िय्यत त़ारी हो जाती है और दिल दीदारे गुम्बदे ख़ज़रा के लिये मदीने की ह़ाज़िरी की तमन्ना में मचलने लगता है। जूं जूं वक़्त मदनी माह़ोल में गुज़रता जा रहा है इ़श्क़े रसूल में भी इज़ाफ़ा होता जा रहा है यहां तक कि मेरी कोई दुआ भी बारगाहे मुस्त़फ़ा में ह़ाज़िरी की भीक से ख़ाली नहीं होती। दिल में इ़श्क़े मुस्त़फ़ा की इस भड़कती आग ने मेरी आ़दाते बद को जला कर ख़ाकिस्तर कर दिया है और अब बे अदबी व गुस्ताख़ी की जगह वालिदैन और बड़ों के अदब और छोटों पर शफ़्क़त ने ले ली है। येह सब मदनी माह़ोल की बरकत है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पन्दरहवीं सदी की अ़ज़ीम इ़ल्मी व रूह़ानी शख़्सिय्यत, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का साया यूंही तादेर क़ाइमो दाइम रखे और हमें और सारी दुन्या को इन के फ़ैज़ान से माला माल होने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

*तुम्हें लुत्फ़ आ जाएगा ज़िन्दगी का क़रीब आ के देखो ज़रा मदनी माह़ोल*
*नबी की महब्बत में रोने का अन्दाज़ चले आओ सिखलाएगा मदनी माह़ोल* [1]

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

1 ...वसाइले बख़्शिश, स. 604

# ماخذومراجع


| | قرآن مجید | کلام باری تعالیٰ | |
|---|---|---|---|
| نمبر شمار | کتاب | مصنف / مؤلف | مطبوعہ |
| .1 | کنز الایمان | اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ | مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ |
| .2 | موطا امام مالک | امام مالک بن انس اصبحی، متوفی ۱۷۹ھ | دار المعرفۃ بیروت ۱۴۳۳ھ |
| .3 | کتاب المغازی | ابو عبد اللہ امام محمد بن عمر واقدی، متوفی ۲۰۷ھ | عالم الکتب بیروت ۱۴۰۴ھ |
| .4 | السیرۃ النبویۃ | ابو محمد عبد الملک بن ہشام، متوفی ۲۱۳ھ | دار الفجر مصر ۱۴۲۵ھ |
| .5 | الطبقات الکبری | محمد بن سعد بن منیع ہاشمی، متوفی ۲۳۰ھ | دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۱ھ |
| .6 | المسند | امام احمد بن محمد بن حنبل، متوفی ۲۴۱ھ | دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۹ھ |
| .7 | صحیح البخاری | امام ابو عبد اللہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ۲۵۶ھ | دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۸ھ |
| .8 | صحیح مسلم | امام ابو الحسین مسلم بن حجاج قشیری، متوفی ۲۶۱ھ | دار الکتب العلمیۃ بیروت 2008ء |
| .9 | سنن ابی داود | امام ابو داود سلیمان بن اشعث سجستانی، متوفی ۲۷۵ھ | دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۸ھ |
| .10 | سنن الدار قطنی | امام علی بن عمر دار قطنی، متوفی ۳۸۵ھ | دار الفکر، بیروت ۱۴۲۶ھ |
| .11 | سنن الترمذی | امام ابو عیسیٰ محمد بن عیسیٰ ترمذی، متوفی ۲۹۷ھ | دار الکتب العلمیۃ بیروت 2008ء |
| .12 | نسائی | امام ابو عبد الرحمن احمد بن شعیب نسائی، متوفی ۳۰۳ھ | دار الکتب العلمیہ بیروت 2009ء |
| .13 | قوت القلوب | شیخ ابو طالب محمد بن علی مکی، متوفی ۳۸۶ھ | دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۲۶ھ |
| .14 | الاستیعاب | ابو عمر یوسف بن عبد اللہ ابن عبد البر قرطبی، متوفی ۴۶۳ھ | دار الفکر بیروت ۱۴۲۷ھ |
| .15 | مکاشفۃ القلوب | حجۃ الاسلام ابو حامد امام محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ | مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی |
| .16 | فردوس الاخبار | حافظ شیرویہ بن شہردار بن شیرویہ دیلمی، متوفی ۵۰۹ھ | دار الفکر، بیروت ۱۴۱۸ھ |
| .17 | کتاب الشفا | القاضی ابو الفضل عیاض مالکی، متوفی ۵۴۴ھ | دار الفکر، بیروت ۱۴۳۲ھ |
| .18 | صفۃ الصفوۃ | امام ابو الفرج عبد الرحمن بن علی ابن جوزی، متوفی ۵۹۷ھ | دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۷ھ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| .19 | اسد الغابة | ابو الحسن علی بن محمد ابن اثیر جزری، متوفی ۶۳۰ھ | دار الکتب العلمیة بیروت ۱۴۲۹ھ |
| .20 | تفسیر القرطبی | ابو عبد اللہ محمد بن احمد انصاری قرطبی، متوفی ۶۷۱ھ | دار الفکر، بیروت ۱۴۲۹ھ |
| .21 | الاصابة | حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی، متوفی ۸۵۶ھ | المکتبة التوفیقیہ مصر |
| .22 | نزهة المجالس | العلامة عبد الرحمن بن عبد السلام الصفوری الشافعی، متوفّٰی ۸۹۴ھ | المکتب الثقافی ۱۴۲۵ھ |
| .23 | المواهب اللدنیة | شهاب الدین احمد بن محمد قسطلانی، متوفی ۹۲۳ھ | دار الکتب العلمیة بیروت 2009ء |
| .24 | سبل الهدی | محمد بن یوسف صالحی شامی، متوفی ۹۴۲ھ | دار الکتب العلمیة بیروت ۱۴۱۴ھ |
| .25 | شرح الشفا | ملا علی قاری هروی حنفی، متوفی ۱۰۱۴ھ | دار الکتب العلمیة بیروت ۱۴۲۸ھ |
| .26 | مدارج النبوت | شیخ محقق عبد الحق محدث دهلوی، متوفی ۱۰۵۲ھ | النوریة الرضویہ لاهور ۱۹۹۷ھ |
| .27 | اشعة اللمعات | شیخ محقق عبد الحق محدث دہلوی، متوفی ۱۰۵۲ھ | فرید بک سٹال لاهور |
| .28 | نسیم الریاض | شهاب الدین احمد بن محمد بن عمر خفاجی، متوفی ۱۰۶۹ھ | دار الکتب العلمیة بیروت ۱۴۲۱ھ |
| .29 | شرح الزرقانی | ابو عبد اللہ محمد بن عبد الباقی زرقانی، متوفی ۱۱۲۲ھ | دار الکتب العلمیة ۱۴۱۷ھ |
| .30 | ذوق نعت | مولانا حسن رضا خان قادری متوفی ۱۳۲۶ھ | شبیر برادرز لاهور |
| .31 | فتاوی رضویہ | اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ | رضا فاؤنڈیشن، لاهور |
| .32 | حدائق بخشش | اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ | مکتبة المدینه |
| .33 | بهار شریعت | مفتی محمد امجد علی اعظمی، متوفی ۱۳۶۷ھ | مکتبة المدینه، کراچی |
| .34 | مرآة المناجیح | مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ | نعیمی کتب خانہ گجرات |
| .35 | سامان بخشش | حضرت علامہ شاہ محمد مصطفےٰ رضا نوری متوفی ۱۴۰۲ھ | شبیر برادرز لاهور ۱۴۳۲ھ |
| .36 | سیرت مصطفیٰ | شیخ الحدیث علامہ عبد المصطفیٰ اعظمی، متوفی ۱۴۰۶ھ | مکتبة المدینه باب المدینه کراچی ۱۴۲۹ھ |
| .37 | جنتی زیور | شیخ الحدیث حضرت علامہ عبد المصطفیٰ اعظمی، متوفی ۱۴۰۶ھ | مکتبة المدینه، باب المدینه کراچی |
| .38 | وسائل بخشش | حضرت علامہ مولانا محمد الیاس قادری دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ | مکتبة المدینه باب المدینه کراچی ۱۴۲۹ھ |
| .39 | شاہنامۂ اسلام مکمل | ابو الاثر حفیظ جالندهری | الحمد پبلی کیشنز 2006ء |
| .40 | صحابہ کرام کا عشق رسول | المدینة العلمیة | مکتبة المدینه باب المدینه کراچی ۱۴۲۹ھ |
| .41 | دیوان حسان بن ثابت | صحابی رسول حسان بن ثابت رضی اللہ تعالی عنه | دار الکتب العلمیة بیروت ۱۴۱۴ھ |
| .42 | لسان العرب | جمال الدین محمد بن مکرم ابن منظور الافریقی، متوفی ۷۱۱ھ | مکتبہ اشرفیہ کانسی روڈ کوئٹہ |

# फ़ेहरिस्त


| उ़नवान | सफ़ह़ा | उ़नवान | सफ़ह़ा |
|---|---|---|---|
| दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत | 1 | (7) दुरूद शरीफ़ | 32 |
| आप हैं तो सब कुछ है | 2 | (8) क़ब्रे अन्वर की ज़ियारत | 34 |
| ह़ज़रते उम्मे अम्मारा की जां निसारी | 4 | सीरते सह़ाबियात की रौशनी में इ़श्क़ो मह़ब्बते मुस्त़फ़ा पर मुश्तमिल चन्द बातें | 37 |
| मह़ब्बते रसूल फ़र्ज़ है | 6 | | |
| इ़श्क़ो मह़ब्बत क्या है? | 7 | पहली अ़लामत : कसरते ज़िक्र | 37 |
| इ़श्क़ो मह़ब्बत में फ़र्क़ | 8 | दूसरी अ़लामत : शौक़े मुलाक़ात | 38 |
| मह़ब्बते बारी व मह़बूबे बारी से मुराद | 9 | फ़िराक़े नबी में तड़पने वाली सह़ाबिया | 38 |
| कुरआनो सुन्नत और मह़ब्बते रसूल | 10 | तीसरी अ़लामत : इत्तिबाए़ शरीअ़त | 39 |
| मह़ब्बते रसूल के फ़र्ज़ होने की एक अ़क़्ली तौजीह | 12 | चौथी अ़लामत : क़ुर्बे मह़बूब की कोशिश | 41 |
| सह़ाबियात की वारफ़्तगी का आ़लम | 14 | पांचवीं अ़लामत : जानो माल की क़ुरबानी | 44 |
| भाई और शौहर की शहादत पर नाज़ | 16 | छटी अ़लामत : हुक्मे मह़बूब पर अ़मल | 46 |
| क़बीलए बनी दीनार की बुढ़िया | 16 | कंगन उतार कर फेंक दिये | 47 |
| सरकार की सलामती पर सब कुछ क़ुरबान | 17 | चादरें फाड़ कर दूपट्टे बना लिये | 48 |
| दीदारे सरकार की खुशी में रोना भूल गईं | 18 | हुक्मे सरकार बजा लाने की एक और मिसाल | 49 |
| सरकार ही दिलों का सुरूर हैं | 19 | सातवीं अ़लामत : मह़ब्बत व नफ़रत का मे'यार | 51 |
| मह़ब्बते मुस्त़फ़ा के तक़ाज़े | 20 | आठवीं अ़लामत : राहे ख़ुदा के मसाइब पर सब्र | 52 |
| उम्मत पर हुक़ूक़े मुस्त़फ़ा | 21 | नवीं अ़लामत : तबर्रुकाते मुक़द्दसा की ता'ज़ीम | 53 |
| (1) ईमान बिर्रसूल | 23 | मूए मुबारक से सह़ाबियात की मह़ब्बत | 54 |
| (2) इत्तिबाए़ सुन्नते रसूल | 24 | उ़म्र भर हार गले से न उतारा | 55 |
| (3) इत़ाअ़ते रसूल | 25 | सरकार के पसीने से सह़ाबियात की मह़ब्बत | 55 |
| (4) मह़ब्बते रसूल | 26 | करमे सरकार की मुश्ताक़ | 56 |
| सरकार की तक्लीफ़ बरदाश्त न होती | 27 | इ़श्क़ और आ़शिक़ाने रसूल के मुतअ़ल्लिक़ चन्द बातें | 57 |
| (5) ता'ज़ीमे रसूल | 28 | | |
| आदाबे बारगाहे नबुव्वत की अनोखी मिसाल | 29 | इ़श्के़ रसूल की दौलत मिल गई | 58 |
| बारगाहे नबुव्वत की बे अदबी क़त़्अ़न गवारा न थी | 30 | माख़ज़ो मराजेअ़ | 60 |
| (6) मद्हे रसूल | 31 | फ़ेहरिस्त | 62 |

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

## नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमा'रात बा'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ۞ सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ۞ रोज़ाना ''फ़िक्रे मदीना'' के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

**मेरा मदनी मक़्सद :** ''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।'' اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

अपनी इस्लाह़ के लिये ''मदनी इन्आ़मात'' पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये ''मदनी क़ाफ़िलों'' में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

ISBN
0133009

مکتبۃ المدینہ
MAKTABA TUL MADINAH
MC 1286

### मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

۞ देहली :- उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560
۞ अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अह़मदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200
۞ मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा इस्टेट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997
۞ हैदराबाद :- मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786
E- mail : maktabadelhi@gmail.com, Web : www.dawateislami.net